“उलामा ए किराम के तास्सुरात के साथ

अफ़कार

उम्मते मुस्लिमा के हालात, असरी तक़ाज़े और दावते फ़िक्र

हिस्सा 5

मौज़ूआत

नाशिर:
तहरीक निज़ामे मुस्तफा



Book name: AFKAR PART 5

Language: Hindi

Author: Ulama e Ahle Sunnat

Hindi Translation: Muhammad Saqib & Junaid Qadri

Chief Editor: Muhammad Hassaan Raza Rayeeni

Hijri Date: 08 Muharram ul Haram 1443 H

English Date: 18 August 2021(Wednesday)

Publisher: Tehreek Nizam e Mustafa (India) or TNM Official

Any Query, contact us: 9675801762 & 9720315389

Read another books, visit: https://tnmofficial786.blogspot.com/?m=1

Also follow us on: Facebook | Instagram | Youtube | Twitter

About Us:

All Praise is to Allah the Exalted! The revolutionary organization of Ahlus Sunnah wal Jama'ah "Tahreek Nizam e Mustafa" is constantly working for propagating the message of Ahlus Sunnah. And every work which it does is in the light of thoughts and views of Imam Ahmad Raza. It is an organization comprising of students from schools and colleges as well as seminaries (Madaris). The main aim of our organization is to preserve the beliefs of Ahlus Sunnah and the eradication of various ill practices in the society and regarding the same time and again various articles are published by us and along with it religious gatherings are organized. It is supplication to Allah the Exalted that he through the mediation of his Prophet (peace and blessings be upon him) blesses the members of this organization with true love of Islam and keeps them firm on the creed of Ahlus Sunnah wal Jama'ah and gives them success in their goals. Ameen.

TNM OFFICIAL

उलमा ए अहले सुन्नत के अफ़कार मैगज़ीन पर तास्सुरात

अज़ : मुसलेहे क़ौमो मिल्लत अल्लामा ततहीर अहमद साहिब किबला

بسم اللہ الرحمن الرحیم

तहरीक निज़ाम ए मुस्तफा ﷺ के ज़ेरे एहतिमाम "अफ़कार" नाम की इस्लामी मैगज़ीन की कुछ कापियों के चन्द मक़ालात व मज़ामीन जगह जगह से देखने का मौक़ा मिला, बड़ी ख़ुशी हुई और एक मैं ही क्या हर दीन दोस्त आदमी इसे देखकर ख़ुश होगा।

मुदीर ए आला अज़ीज़म जनाब हस्सान रज़ा राईनी साहिब दीन और दुनिया के ऐतिबार से हालाते ज़माना पर नज़र रखने वाली एक साहबे बसीरत शख़्सियत हैं और उनके साथ अहले इल्मो दानिश की एक अच्छी टीम है जो काफी वाफी दीनी इस्लामी मालूमात रखने के साथ साथ जदीद उलूम से ख़ूब वाकिफ हैं। दौरे हाज़िर के तक़ाज़ों की भरपूर जानकारी रखते हैं इस्लामी उलूमो ख़्यालात व नज़रियात को ख़वास व अवाम के ज़हनों से करीब करने के लिए हर सतह व मियार पर उतरने की पूरी सलाहियत रखते हैं।

यह मैगज़ीन वक़्त की एक अहम ज़रूरत है मुझ को उम्मीद है कि मुआशरे में फैली हुई बुराइयां तरह तरह की ख़राबियां दूर करने के लिए यह अंधेरे का चिराग साबित होगी दुआ है रब्बे करीम रऊफ़-उर-रहीम मक़बूले आम फ़रमाए और क़ौम के बच्चे, बूढ़े, जवानों, मर्दों, औरतों सब को इससे नफ़ा हासिल करने की तौफ़ीक अता फ़रमाए मुदीर ए आला और शुरका ए कार की यह सयी ए मशकूर, कोशिश ए मक़बूल मेहनत ए महबूब फ़रमाए

آمین یارب العالمین بجاہ سید المرسلین علیہ و علی آلہ افضل الصلاۃ والتسلیم

कुतबा: अल-अब्द

ततहीर अहमद रज़वी बरेलवी

15 शाबान उल मुअज़्ज़म 1442 हिजरी

29 मार्च 2021



अज़: मौलाना तारिक़ अनवर साहिब मिस्बाही

मुदीर माहनामा पैग़ाम ए शरीयत देहली

مسبلا وحامدا::ومصليا ومسلما

रिसाला "अफ़कार" के चार शुमारे नज़र नवाज़ हुए। इसके मशमूलात व मन्दरजात और मज़ामीन व तहारीर देखकर क़ल्बी फ़रहत व शादमानी महसूस हुई। तमाम मवाद को हालात के तक़ाज़ों के मुताबिक पाया।

अवामुन्नास और स्कूल व कालेज के तलबा व तालिबात के लिए ऐसे रसायल बहुत पुरकशिश होते हैं। जिन में सहल उस्लूब में इस्लामी अक़ायद व मसाइल पेश किए जाएं। इस रिसाले ने वक़्त की एक अहम ज़रूरत की तकमील कर दी है।

रिसाले के तमाम कारकुनान व ज़िम्मेदारान और मज़मून निगारान व मुआवेनीन दुआओं और तहसीनो आफ़रीं के मुस्तहिक़ हैं। ख़ुसूसन जनाब मोहम्मद हस्सान रज़ा राईनी और उनके जुमला अहबाब। जिन्होंने मुसलमानाने हिन्द के लिए ऐसे जाज़िब नज़र और नफ़ा व कीमती तोहफे का एहतमाम व इंतज़ाम किया।

हम उम्मीद रखते हैं के अहले इदारा यह सिलसिला तादेर जारी रखेंगे और क़ौम को इसी तरह बेश-बहा इल्मी तहायफ़ से नवाज़ते रहेंगे।

अल्लाह तआला हमारी उम्मीदों की तकमील फ़रमाए और और अहले इदारा को दोनों जहां की सआदतों और नेमतों से बहरा मन्द फ़रमाए और दारैन के हसनातो बरकात से सरफ़राज़ फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الامین الکریم علیہ وعلی آلہ واصحابہ الصلوۃ والتسلیم

तारिक़ अनवर मिस्बाही

9 अप्रैल 2021



अज़· माहिर ए दरसियात मौलाना तंज़ीफ अहमद साहिब रज़वी मिस्बाही

नाज़िम ए तालीमात जामिया रज़विया बरकात उल उलूम सहसवान

गिरामी क़द्र जनाब मोहम्मद नाज़िम साहब रज़वी।

وعلیکم السلام ورحمۃ اللہ

तहरीक निज़ाम ए मुस्तफा ﷺ की जानिब से निकलने वाला मैगज़ीन बनाम अफ़कार के चार हिस्से बज़रिया ए पीडीएफ मौसूल हुए। दौर ए जदीद के तक़ाज़ों से आरास्ता मजमूए देखकर आंखों को नूर, दिल को सुरूर हासिल हुआ। अमल की इस्लाह के साथ, बहुत ख़ुश उस्लूबी से अक़ायदे हक़्क़ा अहले सुन्नत को क़ौम तक पहुंचाने की कोशिश लायक़े सद तहसीन है।

बिलाशुबह जमाअत ए अहले सुन्नत में यह एक ऐसा अनोखा और बामक़सद काम है जिस की अशद ज़रूरत महसूस की जा रही थी।

मौला तआला आप हज़रात की कोशिशों को मक़बूल व मंज़ूर फ़रमाकर दारैन की सआदतों से नवाज़े और इस मैगज़ीन से सारे जहां मुस्तफ़ीद फ़रमाए।

والسلام

तंज़ीफ अहमद साहिब रज़वी

अज़· मौलाना मुहम्मद साबिर साहिब इस्माईली

मुदीर ए आला महानामा बहारे तहरीर

अफ़कार: उम्मते मुस्लिमा के हालात असरी तक़ाज़े और दावत फ़िक्र

आज से तक़रीबन एक साल पहले तहरीक निज़ाम ए मुस्तफा ﷺ की जानिब से यह सिलसिला शुरू किया गया। इस मैगज़ीन"अफ़कार" का पहला हिस्सा "मई 2020" में शाये हुआ था। यह सच है कि काफ़ी कुछ लिखा जा चुका है और लिखा जा रहा है लेकिन तहरीरी काम की इतनी ज़रूरत है के जितना भी लिखा जाए कम होगा। उम्मते मुस्लिमा के मौजूदा हालात पर कलाम करना, असरी तक़ाज़ों के मुताबिक मवाद फ़राहम करना और दावते फ़िक्र बहुत ज़रूरी है। आज मुसलमानों के जो भी हालात हैं या फिर मुस्तकबिल की ही बात करें तो उनमें अफ़कार का एक अहम किरदार है। यह बात काबिले गौर है के हमारी फ़िक्र क्या है? जब फ़िक्र अच्छी होगी तो हम अच्छे काम के लिए आगे बढ़ेंगे। जहां हर तरफ़ से दुश्मनान ए इस्लाम इस कोशिश में लगे हुए हैं के उम्मते मुस्लिमा को ज़हनी तौर पर ग़ुलाम बना कर इस्तेमाल किया जाए तो ऐसे में यह भी हमारा मक़सद है के हम अफ़कार पर काम करें। अपने नाम की तरह यह मैगज़ीन इसी मक़सद का एक हिस्सा बनी हुई है। अल्लाह तआला इसे क़ुबूल फ़रमाए।

इसके चार हिस्से शाये हो चुके हैं और यह पांचवां हिस्सा आप के सामने है। कई उलमा के मज़ामीन इसमें शामिल किए जाते हैं। उनका मुतालआ कम वक़्त में बहुत फ़ायदा देता है क्योंकि बाज़ औकात पूरी किताब का निचोड़ आपको एक मज़मून में मिल जाता है। पढ़ने वाले इस का फ़ायदा उठाएं

और जिन्होंने मेहनत की है उनके लिए दुआ फ़रमाएं, साथ ही दूसरों को पढ़ने की तरग़ीब दी जाए।

अब्दे मुस्तफा मुहम्मद साबिर इस्माईली



अज़· मौलाना मुहम्मद जसीम साहिब अत्तारी

मुतअल्लिम जामियातुल मदीना फैज़ान ए अत्तार नेपालगंज नेपाल

मैंने अफ़कार मैगज़ीन का मुतालआ किया तो दौरे हाज़िर के ऐतिबार से बहुत बहुत मुफीद पाया मौजूदा दौर में पायी जाने वाली ख़राबियों को बहुत ही बेहतरीन और आसान अल्फ़ाज़ में पिरोया गया है जिससे क़ारेईन को पढ़ने के शौक़ो इल्म में मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ होगा!

मेरी पर्सनल यह ख़्वाहिश थी के ऐसे मौज़ूआत पर कोई रिसाला या किताब मयस्सर हो के जिसका मुतालआ क्या जाए फिर आखिरकार एक इस्लामी भाई ने मुझको अफ़कार मैगज़ीन की पीडीएफ फाइल सेण्ड की मैंने इसको पढ़ा और इल्म में मज़ीद इज़ाफ़ा हुआ और बहुत बहुत बेहतर लगा मैं उनका बहुत शुक्रगुज़ार हूं। अल्लाह पाक इसके मुहर्रेरीन को बेहतर जज़ा अता फ़रमाए अल्लाह पाक हम सबको अमल की तौफ़ीक अता फ़रमाए!

मुहम्मद जसीम साहिब अत्तारी

अफ़कार



[पार्ट 5 हिंदी]

नाशिर:

तहरीक निज़ामे मुस्तफा

पेशे लफ्ज़

कुब्बत ए फ़िक्र ओ अमल पहले फना होती है।

फिर किसी क़ौम की शौक़त पर ज़वाल आता है

उम्मत ए मुस्लिमा के मौजूदा हालात किसी से पोशीदा नहीं हैं हुकूमत उनके पास नहीं इक्तेदार उनका खत्म हो चुका लेकिन एक चीज़ इस उम्मत के पास बाकी थी जिसे फ़िक्र कहते हैं जिस फ़िक्र को लेकर ये उम्मत मेहनत मशक्कत करके अपने दुश्मन को खाक में मिला सकती थी लेकिन अब वो फ़िक्र ही इस क़ौम के दिलों से खत्म होती जा रही है और ये क़ौम गैरों की गुलामी की ज़ंजीरों में जकड़ चुकी है सब कुछ खत्म हो चुका है फिर भी हमारे हालात क्या हैं? वही गुनाहों में लुथड़ी ज़िन्दगी

अरे ये तो वक़्त अल्लाह की बारगाह में रोकर गिड़गिड़ाकर माफ़ी मांगने का था के हम अल्लाह तआला से अर्ज़ गुज़ार होते के या अल्लाह हमें माफ़ फ़रमादे हमें दरगुज़र फ़रमादें हम अपने गुनाहों से तौबा करते हैं हमने तेरे अहकाम की पाबन्दी नहीं की इस लिए हम पर ये मुसीबतें आयी हुई हैं

ये तो वक्त अपने प्यारे नबी की बारगाह में रुजू करने का था और आप के सदके अल्लाह से दुआ करने का था लेकिन हम गफलत में मुब्तिला हैं हम वही कर रहे हैं जो हमारा नफ़्स हमसे कह रहा है

इस मैगज़ीन को पब्लिश करने का मकसद सिर्फ और सिर्फ ये है के उम्मत ए मुस्लिमा की फ़िक्र को नयी ताज़गी दी जाये और जो बुराइयां और नफ़रतें हमारी क़ौम के दरमियान पनप रही हैं और बुज़दिली हमारी पहचान बन

चुकी है इन सब को खत्म करने की कोशिश की जाये ये तभी हो सकता है के मुआशरे का हर इंसान बुराईयों को मिटाने के लिए जद्दोजहद करे और इस को अपना एक अहम फ़रीज़ा समझ कर काम करे फिर वो दिन दूर नहीं जिस दिन हम अपने खोये हुए दिन वापस पा लेंगे ज़रूरत है क़ौम के फ़िक्र ओ अमल पर काम करने की

पढ़ने वालों से गुज़ारिश है के इस मैगज़ीन को पढ़ने तक ही महदूद न रखें बल्कि इस से सबक हासिल कर अपनी ज़िन्दगी में इस्लाम के मुताबिक अमल करने की ज़रूरत है इस मैगज़ीन को पब्लिश करने का मक़सद तभी हासिल हो सकता है जब इसको पढ़ने वाले अल्लाह की तौफ़ीक़ से इन तालीमात पर अमल करें अल्लाह हमारा हामी ओ मददगार हो



मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

मगरिब का निज़ामे तालीम और उस के लर्ज़ा खेज़ असरात

:मुफक्किर ए इस्लाम अल्लामा क़मरुज़्ज़मां साहिब क़िब्ला आज़मी

तालीम का बुनियादी मक़सद एक मसर्रत बख्श, पुरसुकून तख्लीक़ी और तामीरी ज़िन्दगी का हुसूल है। सही तालीम, मुआशिरे की तश्कील ओ तामीर में इन्तेहाई अहम रोल अदा करती है मगर खराब तालीम मुआशिरे को तबाहो बर्बाद कर देती है।

अमेरिका के सदर जॉन ऐफ कैंडी ने कहा था:

"बच्चे की खराब तालीम बच्चे के क़त्ल के मुतरादिफ है"।

जोसेफ स्टालिन ने कहा था:

"तालीम एक हथियार है मगर इस का इस्तेमाल मुअल्लिम, मक़सदे तालीम और तालीम के इरादों पर मब्नी है इस से अच्छाइयों का खून भी किया जा सकता है और बुराईयों का इस्तीसाल भी"।

यूनानी फिलास्फर अरस्तातालीस ने कहा था:

"हुक्मरानों और बादशाहों का मुस्तक़्बिल बच्चों की तालीम पर मुन्हसिर है।"

मनदरजा बाला अक़वाल की रौशनी में आज हम मगरिबी और बिल्खुसूस बरतान्वी निज़ाम की तालीम का जायज़ा लें तो हम ये कहने पर मजबूर होंगे

कि मौजूदा निज़ामे तालीम तामीरे इंसानियत की तरफ नही बल्कि तखरीब की तरफ एक मुनज़्ज़म और खौफनाक पेश-रफ्त है।

आज के स्कूलों, कॉलेजों और यूनिवर्सिटी में जो निज़ामे तालीम राइज है उस के नतीजे में पूरा मुआशरा तबाही और बर्बादी के दहाने पर पहुंच चुका है। क़त्ल,लूट,गारतगर्दी, ज़िना,गैर शादीशुदा माओं की कसरत, ये सारे मफासिद मौजूदा निज़ामे तालीम का मनतक़ी नतीजा है।

आज के स्कूल और कॉलेज एक ऐसे जंगल में तब्दील हो चुके हैं जहां अखलाक़ी गिरावट, जिन्सी अनारकी, ड्रग्स का इस्तेमाल, इंसानियत की तज़हीक, मुस्तक़्बिल से बे-नियाज़ी और अंजामकार के तौर पर मायूसी और खुदकुशी सभी कुछ मौजूद है लेकिन इंसानियत की आला तरीन अक़दार का दूर दूर तक पता नही है।

सवाल ये पैदा होता है की ऐसा क्यों है? इस का सब से मुख्तसर और मुकम्मल जवाब ये है कि आज के निज़ामे तालीम से रूहानी और अख्लाक़ी मज़ामीन को खारिजे निसाब क़रार दे दिया गया है। आज उन के हाथ में इल्म का हथियार तो दिया जा रहा है मगर उन्हें ये बताने वाला मौजूद नहीं है की हमारा मक़सदे हयात क्या हो?, हमारे फराइज़ दूसरों से मुताल्लिक़ क्या हैं? , हमें किस लिये पैदा क्या गया है?, और हमें मक़सदे तख्लीक़ को हासिल करने के लिये किन राहों पर चलना होगा? मौजूदा आम तालीम को अख्लाक़ी मज़ामीन से बे नियाज़ कर देने का नतीजा ये है कि खुदगर्ज़ी और नफ्स परस्ती ने ज़ुल्म और जब्र का बाज़ार गरम कर रखा है और इन्सान, इन्सान को निगल जाने की कोशिश में लगा हुआ है।

एक अज़ीम साइंसदान अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि

"बच्चे अगर अख्लाक़ी ऐतबार से तालीम पर पूरे उतरें तो वो इन्सान हैं वरना उनकी हैसियत एक तर्बियत याफ्ता कुत्ते से ज़्यादा नहीं है"

मशहूर इंग्लिश लेखक़ जॉन रस्कन ने कहा था:

"तालीम का ये मक़सद नहीं है कि लोगों को वो बताया जाए जो वो नहीं जानते, बल्कि उस का मक़सद ये है कि लोगों को ये पढाया जाए कि वो काम करें जो वो नहीं करते"

तालीम का मक़सद खाली दिमागों में मालूमात का भरना नहीं है बल्कि ऐसी चीज़ों को तालीम देना है जो उनके लिये मुफीद और तामीरी हों।

मज़हबी और रूहानी, अख्लाक़ी और एतिक़ादी अक़दार को निसाबे तालीम से खारिज कर देने का पहला भयानक नतीजा पहली और दुसरी जंगे अज़ीम की सूरत में निकला था और अब भी अगर इन मफासिद का सद्दे बाब ना किया गया और इन्सानो को इन्सानो से मुहब्बत और एहतेराम की तालीम ना दी गई तो तीसरी जंगे अज़ीम दुनिया की मुकम्मल तबाही पर खड़ी होगी।

आज अमेरिका और रूस एटमी असलह के फैलाओ को रोकने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन सवाल ये पैदा होता है कि ये एटमी असलाह तैयार ही क्यूँ किये गये? क्या इस क़दर खतरनाक असलह तैयार करने वाले जाहिल थे? क्या उन्हें मालूम नहीं था कि हम दुनिया की मुकम्मल तबाही का सामान फराहम कर रहे हैं?

क्या एटम बम बनाते वक़्त उन के कानों में लाखों कराहें, उन की आंखों के सामने करोड़ों तड़पती हुई लाशें नहीं आई थीं? क्या उन्होंने चश्मे तसव्वुर से झुलसी और जली हुई दुनिया का मुशाहिदा नहीं किया था?

जवाब सिर्फ ये है कि ये उनके निज़ामे तालीम का क़ुसूर था जिसमे इंसानियत से मुहब्बत और उस के एहतेराम का कोई उन्सर बाक़ी ही ना रहने दिया गया था। अगर सांइस की तालीम के साथ साथ उन को मज़हब की तालीम भी दी गई होती, उनकी अखलाक़ी और इंसानी क़दरो को जिला बख्शी गई होती तो माद्दी तरक़्क़ी के जुमला वसाइल को तखरीब के लिये नहीं बल्कि सिर्फ तामीर के लिये इस्तेमाल किया गया होता।

इंसानियत को मौत के दरवाज़े पर पहुंचाने के बाद भी अगर मगरिबी दर्सगाहों ने अखलाक़ी तालीमात की ज़रूरत को महसूस नहीं किया तो फिर इस दुनिया को मुकम्मल तबाही से बचाना नामुमकिन हो जायेगा। आज अगर आप सिर्फ बर्तानिया का जाएज़ा लें तो ये पता चलेगा कि ये नौउम्र बच्चे पूरी हुकूमत के लिये दर्दे सर बने हुए हैं। ये तफरीहन पूरे मुल्क की खुबसूरत इमारतों को तोड़ते फोड़ते नज़र आ रहे हैं। आसूदगी के बावजूद चोरियां करते हैं। ज़रा बड़े हुए तो क़त्ल और डाके की राह पर लग जाते हैं। हेरोइन और दीगर मनशियात को इस्तेमाल करके खुद को तबाह कर लेते हैं। माँ बाप का एहतेराम नहीं करते, उस्ताज़ों का एहतेराम भी दिलों से निकल गया है, बल्कि उनकी तौहीन और उन्हें दुख देने में एक अजीब खास क़िस्म की लज़्ज़त महसूस करते हैं। स्कूल में अपने साथियों की जेब खर्च (pocket money) चुराते हैं और बड़े होकर बेसहारा बूढ़े और कमज़ोर इन्सान जो मौत के इन्तेज़ार में पड़े सिसक रहे होते हैं, उन को क़त्ल कर के उन की जेब के चंद पौंड भी ले भागते हैं। मस्जिदों और चर्चों के शीशे तोड़ते हैं। क़ानून शिकनी करते हैं, पुलिस से हाथापाई करने से भी गुरेज़ नहीं करते। बूढ़े माँ बाप को खैराती इदारों में बेच कर शराब और ज़िना की गलाज़त में डूब जाते हैं। अमेरिका वगैरह का तो यहाँ से भी बुरा हाल है, जहां तमाम

बुराइयाँ करने के बाद मायूसी का शिकार होकर हर 18 मिनट के बाद कम से कम एक नौजवान खुदकुशी कर लेता है।

मौजूदा मुआशिरे को इन तमाम बुराईयों से बचाने के लिये ज़रूरी है कि मज़हब की तालीम लाज़मी क़रार दी जाए और मज़हब की तालीम उन मुलहेदीन के ज़रिए ना दिलाई जाए जो खुद भी मज़हब पर यक़ीन नहीं रखते, बल्कि उन्होनें मज़हबी तालीम को बतौरे पेशा इख़्तियार कर रखा है। बल्कि मज़हब पर यक़ीन रखने वाले और उस पर अमल करने वालो को मज़हबी उमूर का ज़िम्मेदार क़रार दिया जाए। आज के स्कूलों में मज़हब की तालीम को बतौरे रस्म कहीं कहीं बाक़ी रखा गया है मगर उस के मुअल्लिम वो लोग हैं जो मज़हब की अखलाक़ी और रूहानी तालीमात पढ़ाने के बजाए उनको मज़हब से बेज़ार करने के लिए ऐसे मज़ामीन पढाते हैं जो उन को शुकूको शुबहात की दल दल में फांस दें।

इंसानियत की थोड़ी बहुत इस्लाह दूसरे मज़हब की अखलाक़ी तालीमात को पढ़ने से हो सकती है, मगर इस की मुकम्मल इस्लाह सिर्फ मज़्हब ए इस्लाम को निसाबे तालीम का लाज़िमा बनाने से हो सकती है, इसलिये कि इस्लाम ज़िन्दगी के तमाम मुआशरती, तमद्दुनी, अखलाक़ी, समाजी, सियासी, मुआशी और सक़ाफती मसाइल से बहस करता है और रहनुमा खुतूत मुतय्यन करता है।

मज़हबे इस्लाम ही उस्ताज़ और तलबा के उन बुनियादी सवालों का तशफ्फी बख्श जवाब फराहम करता है। हम कौन हैं? हम क्या हैं? हम क्यों हैं? हमारी ज़िन्दगी का मक़सद क्या है? दुसरे इंसानों के मुताल्लिक़ हमारी ज़िम्मेदारियां क्या हैं? हम अपनी ज़िन्दगी को किन खुतूत पर चलाकर अज़ीम और हक़ीक़ी मसर्रत हासिल कर सकते हैं? हम किस तरह से अपने

लिये, खानदान के लिये और पड़ोसियों के लिये कामयाबी हासिल कर सकते हैं? हम अक़वामे आलम के दर्मियान किस तरह अमन क़ायम कर सकते हैं?

"जिन्हें हक़ीर समझकर बुझा दिया तुम ने

वही चिराग जलेंगे तो रोशनी होगी"



क़ुरआन में कोई तब्दीली नहीं

:मुहम्मद इरफ़ान रज़ा क़ादरी

आईये पढ़ते हैं क़ुरआने मजीद की हक़्क़ानियत को और समझते हैं क्या है क़ुरआने मजीद की हक़ीक़त। क़ुरआने मजीद आसमानी किताबों में से एक अज़ीमुश्शान किताब है, क़ुरआने मजीद तमाम इंसानियत के लिये हिदायत का ज़रिया बन कर नाज़िल हुआ है ये हर तरह से कामिल, मुकम्मल बल्कि अकमल है। शक़ और रैब से बालातर है, तहरीफ और तब्दीली से मुनज़्ज़ह और पाक है। कुफ्फार और मुशरिकीन की साज़िशों की भेंट नहीं चढ़ सकती। इस को मिटाने वाले खुद मिट जाते हैं मगर क़ुरआन का एक हर्फ भी नहीं मिटा पाते हैं इसलिये कि क़ुरआन की हिफाज़त और सयानत की ज़िम्मेदारी खुद अल्लाह ने ले रखी है, फरमान ए इलाही है:

انا نحن نزلنا الذکر وانا له لحافظون

तर्जुमा: कि हम नें ज़िक्र यानी क़ुरआने मजीद नज़िल किया और हम ही इस की हिफाज़त करेंगे

(सूरह हिज्र, आयत नम्बर 9)

क़ुरआन मजीद के बेअदब, गुस्ताख और उस की तौहीन करने वाले हमेशा खुदा के क़हर की लपेट में रहते हैं। इसी तरह क़ुरआने मजीद अपने अल्फाज़ और मायनों पर दो ऐतबार से आज तक महफूज़ है और क़यामत तक

महफूज़ रहेगा, इस में ना तो कोई तहरीफ और तब्दीली हुई और ना होगी, और ना ही कोई शक़ और शुबह की गुंजाइश मौजूद है, गोया क़ुरआने मजीद हर ऐतबार से किताब बरहक़ और किताब ए मुबीन है, जो दुनिया वालों के सामने एक बेहतरीन कलाम ए इलाही की हैसियत रखता है, सब से बढ़कर ये बात है कि क़ुरआने मजीद ऐसी किताब है जो मुन्केरीन को अपने नापाक मंसूबों में आजिज़ कर देती है। कुफ्फार ए मक्का ने कहा कि अल्लाह की तरफ से नहीं बल्कि आप ﷺ ने खुद बनाई है फिर अल्लाह ने खुद ही क़ुरआन का दिफ़ाअ़ करते हुए इन कुफ्फार ए मक्का को बतदरीज चैलेंज दिया तो तुम भी इसकी मिसाल पेश करो तारीख़ शाहिद है कि खुदाई चैलेंज को सदियां बीत गई आज तक कोई भी इस जैसा कलाम नहीं ला सका और क़यामत की सुबह तक क़ुरआने करीम जैसा कलाम नहीं ला सकता। अल्लाह करीम ने सूरह यूनुस आयत नंबर 38 में चैलेंज किया है:

اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ۔

तर्जुमा कंज़ुल ईमान: क्या ये कहते हैं कि उन्होंने इसे बना लिया है तुम फरमाओ तो इस जैसी कोई एक सूरत ले आओ और अल्लाह को छोड़कर जो मिल सके सब को बुला लाओ अगर सच्चे हो।

इसी के बाद अल्लाह तआला ने सूरह हूद आयत नंबर 13 में ऐलान फरमाया:

اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ قُلْ فَاْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَیٰتٍ وَّ ادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ۔

तर्जुमा कंज़ुल ईमान: क्या ये कहते हैं कि उन्होनें उसे जी से बना लिया तुम फरमाओ कि तुम ऐसी बनाई हुई दस सूरतें ले आओ और अल्लाह के सिवा जो मिल सके सब को बुला लो अगर सच्चे हो।

जब वो उस से भी आजिज़ आगये तो अल्लाह ने सूरह बक़रह आयत नंबर 23 में ऐलान कर दिया:

فأتوا بسورة من مثله وادعوا شهداءكم من دون الله إن كنتم صادقين

तर्जुमा: अगर इस क़ुरआन के बारे में ज़रा सा भी शक़ हो जो हम ने अपने बन्दे पर उतारा है तो इस जैसी एक सूरह बना लाओ।

इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने पूरी कायनात की इंसानियत को चैलेंज किया है कि तुम अगर ये गुमान करते हो कि क़ुरआने मजीद के अल्फ़ाज़ और जुमल, मफाहीम और मायने, तराकीब और मज़ामीन, उसूल और ज़वाबित और क़वाअद और अक़ाइद में कोई गड़बड़ी है या ये किताब कलाम-उल्लाह (अल्लाह का कलाम) नहीं है तो इस जैसी एक ही सूरह पेश कर के दिखाओ और साथ में ये भी बतलाया कि तुम अकेले मत आओ बल्कि अपने अक़ारिबों को भी बुला लो और मिल कर क़ुरआने मजीद जैसा एक कलाम पेश कर दो, लेकिन ये मुनकिरे क़ुरआन थक हार कर ये कहने पर मजबूर हो गये:

وانه لتنزيل رب العالمين نزل به الروح الأمين علي قلبك لتكون من المنذرين بلسان عربي مبين

(سورہ شعراء آیت 11)

तर्जुमा: और ये क़ुरआन रब्बुल आलमीन का भेजा हुआ है, इस को अमानतदार फरिश्ता लेकर आया है,आप के क़ल्ब पर साफ़ अरबी ज़बान में ताकि आप डराने वालों में से हों।

अब आएं हम थोड़ा जाएज़ा लें मुआशरे में इस के बारे में क्या रवैया है।

आज मुल्के हिन्दुस्तान में मुखालिफ ए क़ुरआन और दीन ए इस्लाम का सबसे बड़ा दुश्मन, खाइन ए क़ुरआन, बद अख्लाक़ो किरदार, नालाइक़ और नादान, ना अहल खब्बीस, ना हन्जार, बदनसीब वसीम रिज़वी जिस ने क़ुरआने मजीद से 26 आयतों को हज़फ करने का सुप्रीम कोर्ट को दायर दरख्वास्त में ये अपील किया था कि नऊज़ु-बिल्लाह क़ुरआन मजीद की 26 आयतें दहशतगर्दी की तालीमात पर मबनी हैं, और उस ने ये भी ज़िक्र किया था कि खुलफाये राशिदीन ने नऊज़ु-बिल्लाह क़ुरआने मजीद में खुर्द बुर्द किये हैं और अपने अंदाज़े और इस्लाम को ताक़त और क़ुव्वत के ज़रिये फैलाने के लिये ये आयतें दाखिल ए क़ुरआन की हैं, ये उस ने सहाबा ए किराम पर इल्ज़ाम आइद किया, और उन आयाते करीमा को सुप्रीम कोर्ट से खत्म करने की अपील की है, और कुछ लोग तो इस मुबारक किताब को गुंडों की किताब कह रहें हैं, शायद इन नालायक़ों को पता नहीं था कि ये कलाम ए इलाही है इसका हर एक जुमला बरहक़ और सादिक़ है और ये भी याद नहीं कि इनके जैसे हज़ारों आये क़ुरआने मजीद को मिटाने वाले लेकिन क़ुरआने मजीद तो क्या इस के एक नुक़्ते को भी हज़फ नहीं कर सके क्युंकि क़ुरआने मजीद अज़ल ता अबद तक बाक़ी रहने वाली मुनफरिद किताब है, और उस को मालूम ही नहीं ये कलामे इंसानी नहीं है और इसी तरह कोई नये मोअ़जज़े नहीं हैं कि तब्दील हो जाए, और इस पर ऐतराज़ात करने वाले अबू लहब, उतबा, शैबा, और अबू जहल ये तमाम के तमाम

दुनिया से मिट गये, लेकिन क़ुरआने मजीद के अल्फाज़ और जुमल और तराक़ीब को तब्दील ना कर सके खुद रब्बे ए क़दीर ने फरमाया

"لا تبدیل لخلق اللہ"

अल्लाह तआला के क़वानीन कभी तब्दील नहीं हो सकते।

आएये अब हम आपको क़ुरआने मजीद की हक़्क़ानियत और खुसूसियत बताते हैं।

क़ुरआन की हक़्क़ानियत का सुबूत इस से भी पता चलता है कि क़ुरआन खुद हक़्क़ानियत पर दलालत करता है क्युंकि ये क़ुरआने करीम अल्लाह तआला का कलाम है और हमारा अक़ीदा है कि अल्लाह तआला हक़ है तो उस से मुताल्लिक़ हर शय भी हक़ है लिहाज़ा क़ुरआने करीम हक़ है और उसकी हक़्क़ानियत ज़ाहिर हो गई।

क़ुरआन की हक़्क़ानियत का सुबूत इस बात से भी पता लगाया जा सकता है कि तक़रीबन साढ़े चौदह सौ बरस गुज़र गये मगर क़ुरान क़ुरआन जैसे नाज़िल हुआ था आज भी क़ुरआने पाक वैसे का वैसा ही है कोई भी तहरीफ और तरमीम नहीं कर सका।

क़ुरआन की हक़्क़ानियत का सुबूत इस से भी मिलता है कि तक़रीबन साढ़े चौधा सौ बरस गुजर गये कि कोहे सफा की चट्टान पर खड़े हो कर नबी ﷺ ने दुनिया वालों से ये गैर मुताज़ल्ज़ल चैलेंज किया कि वो इस का जवाब पेश करें मगर सदियाँ बीत गईं इस का जवाब नहीं मिला।

क़ुरआने मजीद की खुसुसियत ये है कि क़ुरआने का क़त'ई और गैर मुश्तबेह इल्म है, क़ुरआन की सब से बड़ी और मोजिज़ाना और फौक़ अल बशर खुसूसियत इस का इल्म ए क़त'ई और यक़ीनी होना है फरमाने इलाही है:

ذالك الكتاب لا ريب فيه

(البقرة، ايت:١)

ये किताब ए इलाही है जिस में शक़ और शुबह की गुंजाइश नहीं।

क़ुरआने मजीद की एक और खुसुसियत को सुनिये रब ने फरमाया है कि क़ुरआने मजीद में बातिल का कोई शाएबा नहीं होगा।

وانه لا يأتيه الباطل من بين يديه ولا من خلفه تنزيل من حكيم حميد

(حم سجدة: 5)

ये बड़ी बा वुक़अत किताब है जिस में गैर वाक़'ई बात ना इस के आगे की तरफ से आ सकती है और ना इस के पीछे की तरफ से, खुदा ए हकीम महमूद से नाज़िल की गई है।

क़ुरआने मजीद की एक और बड़ी खुसुसियत ये है कि क़ुरआने मजीद ने हक़ और बातिल के दर्मियान फर्क़ करने, हिदायत और गुमराही, ईमान और कुफ्र, इस्लाम और गैरे इस्लाम, आलिम और जाहिल में और खुदा की रज़ा और अदम ए रज़ा, यक़ीन और ज़न और हलाल और हराम में क़यामत तक के लिये एक उसूल पैदा कर दिया, जो दुसरे मज़हब की किताबों में वाज़ेह नहीं किया गया है, फरमाने इलाही है:

تبارك الذي نزل الفرقان علي عبده ليكون للعالمين نذيرا

(الفرقان: 1)

बड़ी आलिशान ज़ात वाला है जिस ने ये फैसले की किताब अपने बन्दा ए खास पर नाज़िल फरमाई ताकि वो तमाम दुनिया जहान वालों के लिये डराने वाला हो

(हवाला मुतआला ए क़ुरआन के उसूल ओ मबादी, सफह 26 से 28)

आइये अब हम हदीस की रौशनी में क़ुरआन की हक़ीक़त को सुनते हैं

सही मुस्लिम में है: खुलासा ए हदीस है कि अनीस क़बीला ए ग़िफार के शायर थे उन्होंने जब आप ﷺ का चर्चा सुना तो छुप कर मक्का आये और आप ﷺ की ज़बान ए मुबारक से कलाम ए रब्बानी की कुछ आयतें सुन कर वापस चले गये। उनके भाई ने पूछा तुम ने कैसा पाया? उन्होंने जवाब दिया कि क़ुरैश कहते हैं कि वो शायर हैं, काहिन हैं। मैं ने काहिनों का कलाम भी सुना है वो कलाम जो मुहम्मद ﷺ से सुना ऐसा नहीं जो काहिनों का है ये काहिनों की बोली नहीं है और शायरों की बोली भी नहीं है हम ने एक एक वज़न को देख लिया मगर वो कलाम ए इलाही है।

मुसनदे अबी याअला और सीरते इब्ने इसहक़ में हदीस का खुलासा मन्क़ूल है: हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदिअल्लाहो अन्हू से रिवायत है कि एक दफ़ा अबू जहल और क़ुरैश के दीगर सरदार जमा हो कर मशवरा करने लगे कि मुहम्मद ﷺ जो कलाम सुनाते हैं उस की हक़ीक़त को जानने के लिये किसी ऐसे आदमी की तलाश करें जो शायरी जानता हो। क़ुरैश के सरदार उतवा बिन रबीया ने कहा मैं जादू, कहानत सब कुछ जानता हूँ अगर आप कहें तो मैं खुद जा कर देखूं। चुनांचे आस्ताना ए नब्वी ﷺ में आकर सुलह की कुछ शराइत पेश कीं आप ﷺ ने उस के जवाब में सूरह फुस्सेलत पढ़नी शुरु की कुछ ही आयतें पढ़ी थी कि उस ने आप ﷺ के लबे मुबारक पर हाथ रख दिया और कहा कि क़राबत

का वास्ता बस कीजिये और वापस आये और तीन दिन तक घर से बाहर ना आये। अबू जहल ने जा कर कहा ऐ उतवा! मुहम्मद ﷺ के यहाँ खाना खा कर फिसल गये हो। उतवा ने कहा तुम जानते हो कि मैं सबसे ज़्यादा दौलतमन्द हूँ मुझ को दौलत की तमअ़ दामन गीर नहीं हो सकती लेकिन मुहम्मद ﷺ ने मेरे जवाब में ऐसा कलाम पेश किया वहां ना शेर था, ना कहानत थी, ना जादू था मैंने ऐसा कलाम कभी नहीं सुना उन्होंने जो कलाम पढ़ा उस में अज़ाब ए इलाही का ज़िक्र था डर की वजाह से क़राबत का वास्ता दे कर रोक दिया और वापस आ गया।

है क़ौले मुहम्मद क़ौले खुदा फरमान ना बदला जायेगा,

बदलेगा ज़माना लाख मगर क़ुरान ना बदला जायेगा।

नोट: अब आखिर में ये बात कहने पर मजबूर हूँ कि क़ुरआने मजीद एक ऐसी वाहिद किताब है जो पाक और मुनज़्ज़ह और मुनज़्ज़ल मिनल्लाह है इस किताब की अज़मत और हक़्क़ानियत पर चंद सफाहात भी लिखने पर क़ादिर नहीं हूँ और बस इतना कहुंगा कि औराक़ और सियाही ख़त्म हो जायेगी मगर क़ुरआने करीम की हक़्क़ानियत, खुसूसियत, अज़मत और फज़ीलत बयान करना मुश्किल ही नहीं, ना मुमकिन है और अगर कुछ लिख भी दूँ तो भी इस का हक़ अदा करने से लागर और नातवां इन्सान की मब्सूत तहरीरें आजिज़ और दर्मांदा रह जायेंगी।

दौरे हाज़िर में अहले सुन्नत को दरपेश चैलेंजिज़

:फरदीन अहमद खान रज़वी

بسم الله الرحمن الرحيم

अल्लाह तबारक व तआला की क़ुदरत ए कामिला और हिकमत ए बालिगा बुलंदी के उस मक़ाम से भी ज़्यादा बुलंद तर है जहां तक कभी इन्सान की फिक्र परवाज़ करने के ख्वाब भी नहीं देख सकती। बल्कि यूं कहें तो गलत ना होगा कि इन्सान की फिक्र ए नापाएदार को हिकमते खुदाबंदी के ज़र्रे से भी अदना निस्बत नहीं। अल्लाह तबारक व तआला ही हमारा खालिक़ है और वही हमारा मालिक, और ये उसी का एहसान ए अज़ीम तो है कि उसने हमें अपने प्यारे महबूब, दानाये सुबुल, खत्म-उर-रुसुल, मौला ए कुल, जनाब ए मुहम्मद उर रसूल-अल्लाह ﷺ की पाक उम्मत, इस अज़ीम मिल्लत में पैदा फरमाया। और ये बात भी यक़ीनी है कि ये मिल्लत ए इस्लामिया भी कोई मामूली क़ौम नहीं है, बरसों लोगों ने इसके बुज़ूद को नीस्त ओ नाबूद करने की कोशिशें की हैं, इसे सफ्हा ए हसती से मिटाने की अन्थक साज़िशें की हैं और फिर भी वो लोग हाथ मलते दुनिया से रुखसत हो गये और ये मिल्लत आज भी उसी शान और शौकत के साथ बाक़ी है। मगर कोई ये ना समझ ले कि ऐसा इसलिए हुआ कि साज़िशें होती रहीं और मिल्लत के नौजवान, दानिशवरान ए मिल्लत, उलमा और मशाइख सब चैन की नींद सोते रहे, और अपने आप ही सारी साज़िशें खाक में मिल गईं। हक़ीक़त तो ये है उन साज़िशों को नाकाम बनाने में तमाम हस्तियों ने खून पसीना एक

करके, रातों की नींद को खैराबाद कह कर, अपना तन, मन, धन सब कुछ दांव पर लगा कर, और बेशुमार क़ुर्बानियां दे कर इस मिल्लत को ज़िल्लत और रुसवाई के अंधेरों से बचाया है और ये उन्हीं लोगों की काविशों का समरा है जिस की तौफीक़ बिला-शुबह उन्हें उनके खालिक़ और मालिक अल्लाह ने दी थी, जिस की वजह से आज भी ये पौधा हरा भरा और लहलहाता नज़र आ रहा है।

इस मुख्तसर तमहीद का मक़सद जुज़वी तौर पर ये तो है कि आपको असलाफ़ के कारनामे याद दिलाउं, मगर उसके सिवा इसका मक़्सद ये भी है कि आपको याद दिलाऊं कि ज़िन्दा क़ौमों को हर रोज नये मसाइल, नई मुश्किलात और नये चैलेंजिज़ दर पेश होते हैं। अगर वो क़ौम ज़िन्दा है तो उसे यक़ीनन हर रोज़ एक नई जंग के लिए तैयारी करना होती है, एक जदीद महाज़ पर लड़ाई के लिए साज़ और सामान दुरुस्त करने होते हैं, और ये मुसल्सल जद्दो जहद ही उस क़ौम की ज़िन्दगी की अलामत हुआ करती है। जिस तरह पहले इस मिल्लत पर कुफ़्र और इलहाद के काले खौफनाक बादल आये और अपना पूरा ज़ोर इस बात पर दिया कि अपने अन्दर के तूफान से इस बस्ती को तबाह और बर्बाद कर दें, ठीक उसी तरह आज भी कुछ ऐसे नादान, दुश्मन और जदान मौजूद हैं जो इसी तरह के अज़ाइम दिल में लिए बस इसी बात के इंतेज़ार में हैं कि कहीं उन्हें एक मौक़ा मिले और वो उम्मत ए रसूले हाशमी फिदाहु उम्मी व अबी ﷺ पर शब खून मारें। अब ये ज़िम्मेदारी हमारी है कि हम हर तरीक़े से इस मिल्लत की हिफाज़त की कोशिश करें जिसके दिफ़ाअ़ के लिए हमारे बुज़ुर्गो ने सर धड़ की बाज़ी लगाई थी।

मैं कोई मुफक्किर या दानिशवर तो नहीं कि आपको तफ्सील और फिक्र ओ नज़र के साथ एक फाज़िलाना लहजे में आने वाले खतरात से आगाह करूं,या किसी खूबसूरत नगमा-गो की तरह बात को साज़ में ढाल कर आप के दिलों पर नक़्श कर दूँ। मैं तो फक़त एक तमाशाई हूँ, जो दुनिया में बरपा इस तमाशे को एक कोने में खड़ा देख रहा है, और अपने आप से बातें किये जा रहा है, कोई राहगीर उसे देखता है तो पागल कह देता है और कोई है कि दीवाने के लक़ब से नवाज़ देता है। अब आइये ज़रा कान मेरे क़रीब कीजिये तो कुछ काम की बातें गोश गुज़ार करूं।

अहले सुन्नत वा जमाअ़त, दुनिया में मुसलमानों की सबसे बड़ी जमाअ़त, उम्मत की नुमाइंदगी का सेहरा जिस मुबारक सवाद के सर पर है, अक़ीदा और एतिक़ाद में सबसे पाकीज़ा मौक़िफ का मालिक गिरोह, जिस को रसूल अल्लाह ﷺ और सहाबा के दौर से सबसे ज़्यादा फिक्री क़ुर्ब भी हासिल है और अमली हम-आहंगी भी। ये यक़ीनन उन पाक हस्तियों की जमाअ़त है जिसने हर दौर में इलहाद और बेदीनी का डट कर मुक़ाबला किया है और तागूती ताक़तों को हर महाज़ पर शिकस्ते फाश दी है। मगर अब अगर आप दिल लगती बात पूंछे, तो हक़ीक़त कुछ यूं है कि आज हमारा हाल बहुत खस्ता हो चुका है। इस क़दर कि हम मुख्तलिफ बुजूहात की बिना पर गिरोहों में बट चुके हैं, कहीं नसब की वजह से, कहीं खानक़ाही इख्तेलाफ, कहीं महज़ तबियत की मुवाफिक़त ना होना और कहीं अपना ज़ाती मफाद भी कार फरमा होता है। बात को ज़्यादा तूल ना देते हुए मैं समझता हूँ कि तर्तीब वार वो चैलेंजिज़ आप की खिदमत में पेश कर दूँ जिन से निपटना हमारे लिए इस दौर में लाज़मी है। وباللہ التوفیق

1- मुत्तहिदा कोशिशों का फुक़्दान(Lack of Team Work)

टीम वर्क एक ऐसा तरीक़ा है जो किसी मामूली से काम को भी गैर मामूली कामयाबी का ताज पहना सकता है। अब जानने की ज़रूरत है कि टीम वर्क है क्या? और इससे भी क़ब्ल ये कि आखिर टीम क्या है? तो इजतिमाई तालीमात के माहेरीन कहते हैं कि:

We define teams as identifiable social work units consisting of two or more people with several unique characteristics...

यानी टीम दो या मज़ीद अफराद के उस गिरोह या जमाअत का नाम है जो अपने जाती तश्ख्खुस से पहचानी जायें। इन औसाफ़ में कई बातों का ज़िक्र है मगर सरे दस्त ये कि:

...These characteristics include a) shared values and goals b) clearly assigned roles and responsibilities c) dynamic social interaction with meaningful interdependencies...

और उन औसाफ़ में से है: क) मुश्तरक़ा मक़सिद- ख) (हर फर्द की) साफ़ और वाज़ेह जिम्मेदारीयां- ग) मुसल्सल राब्ता, माक़ूल बाहमी मफाद के साथ

ये तो रही टीम, अब आते हैं टीम वर्क पर। तो इसकी बाबत माहेरीन फरमाते हैं:

...Teamwork is a process that describes interactions among team members who combine collective resources to resolve task demands.

[BMJ Open]

टीम वर्क उस अमल का नाम है जो टीम के मिम्बरान के माबैन किसी तरह के तबादले को बयान करता है। ये मिम्बरान अपनी इज्तेमाई क़ुव्वत को यक्जा करके एक मुश्तर्क हदफ हासिल करने की कोशिश करते हैं।[1]

हमारे लिए ये अज़ हद ज़रूरी है कि हम इन मफाहीम को समझें और इस पर अमल की कोशिश करें। और अकसर देखा गया है कि हमारी जमाअत के अंदर जो जमाअतें हैं, तहरीकें हैं वो तो किसी तरह इस पर अमल करने की कोशां हैं, मगर ज़्यादा तादाद हमारे बीच आज़ाद काम करने वालों की है जिन्हें हम फ्री लान्सर(Freelancer) कहते हैं। हर फ्री लान्सर खुद में अपने आपको कामिल और अकमल समझता है और किसी से ताव्वुन ए अमल की ज़रूरत या तवक़्क़ो ना करता है ना समझता है। यानी वाज़ेह है कि हम सब तो खुद को वन मैन आर्मी(One Man Army) गरदानते हैं। इशतिराक ए अमल का ख्याल भी हमारे ज़हन के दरवाज़े पर क्यूं दस्तक देने लगा। होना तो ये चाहिए कि हम मुश्तरक अमल की ताक़त को पहचानें और अपनी इज्तेमाई क़ुव्वत को बढ़ाने में अपनो सलाहियतों को सर्फ करें।

(2)- आलमी पैमाने पर सुन्नी क़यादत(Sunni Representation at a Global Level)

ये भी एक बहुत ही अहम मसअला है जिस पर अकसर क़ायेदीन की एक मुत्तहेदा और मुसल्ल्मा क़यादत होनी चाहिए जिसको दुनिया का हर मुल्क

तसलीम करे। दर असल हमारे पेशवाओं ने इस मैदान को ऐसा खाली छोड़ा कि आज कुल आलमी सतह पर जिन्हें भी सुन्नीयत का पेशवा माना जा रहा है वो या तो सुलह-कुल्ली हैं या परले दर्जे के मतलब-परस्त और हुब्बे जाह के पुतले। अब दुनिया इन्हीं को असल समझ रही है और जैसा वो चाहते हैं किसी भी बात को सुन्नी ख्यालात बता कर मुश्तहिर कर देते हैं और दुनिया इसी को सुन्नियत का हिस्सा तसलीम कर लेती है। जान की अमान मिले तो अर्ज़ करूं कि इस तरह जो तेज़ी से लोग गुमराह हो रहे हैं उस का वबाल किस के सर है?

ज़रूरत इस बात की है कि आलमी इदारों से रवाबित दुरुस्त किये जायें और सुन्नियत की सही तर्जुमानी का हक़ अदा किया जाए। वरना लोग आगे चल कर ये भी भूल जायेंगे कि असल में सुन्नियत का सही खद्दो खाल है क्या? और इन गुमराहों की फैलाई हुई खुराफात को भी सुन्नी अक़ीदे का जुज़ तसलीम कर लेंगे।

एक शदीद प्रोपेगंडा (Propaganda)

हम लोग तो चादर तान कर चैन की नींद सोये हुए हैं, हमें तो होश ही नहीं है कि किस तरह एक मुनज़्ज़म साज़िश के तहत हमें मेनस्ट्रीम इस्लाम(Mainstream Islam) से अलग करके दुनिया के सामने पेश किया जा रहा है और हमारे अक़ीदे और नज़रियात को एक फिरक़ा ए महज़ के औहाम और ख्यालात बताये जा रहे हैं। हम जो कि शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रदि-अल्लाहु अन्हू के फिक्री वारिस हैं, इमाम जलालुद्दीन सुयूती रदिअल्लाहू अन्हू के पैरोकार हैं, इमाम नबहानी रदिअल्लाहू अन्हू के

मसलक से मुवाफक़त रखते हैं, खुद हमसे अहले सुन्नत व जमाअत की बाग डोर छीनी जा रही है और हम हैं कि गफलत की नींद सोये हुए हैं।

जहां तक दाद दी जाए वो कम है इस तगाफुल की [क]

यही हाल रहा तो वो दिन भी दूर नहीं है कि जब लोग हमारे अहले सुन्नत होने के दावे पर अंगुश्त नुमाई करेंगे और हम महज़ एक कल्ट(Cult) बन कर रह जायेंगे दुनिया की नज़र में।

सय्यदी सरकार आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िले बरेलवी रदिअल्लाहु अन्हू ने हमारे अक़ाइद व मामूलात को इस्तिदलाल की ज़बान बख्शी है हमारे बुज़ुर्गों के तरीक़ों को क़ुरआन और हदीस से साबित किया है, और उनका मसलक हमेशा ये था कि दुनिया के सामने अहले सुन्नत के सच्चे मज़हब की तब्लीग की जाए। ना जाने इस दौरान वो कौन सा वक़्त आया कि हम ने यही करना बन्द कर दिया और बस अपने अपने लिए ज़रिया ए मुआश की तलब में मुन्हमिक हो गये। अल्लाह तबारक व तआला हमें एहसास ए सूदो ज़ियां अता फरमाए।

(3)- उलमा पर से उठता एतिमाद(Credibility of Scholars)

शायद हमरे वक़्त का सबसे बड़ा अल्मिया ये बन चुका है कि आज का आदमी, यूटयूब पर आने वाले ज़ैद और अमर को तो सुनने के लिए तैयार है। उस के हर बताये हुए मसअले पर लब्बैक कहने को तैयार है, मगर अपनी ही मस्जिद और मदरसे के एक क़ाबिल और बा सलाहियत आलिम की सुन ने को तैयार नहीं हैं। उलमा पर इस क़दर एतिमाद का फुक़दान शायद पहले

कभी ना देखा गया होगा। लोग इस दर्जा बेज़ार हो चुके हैं कि बस अल-अमान वल हफीज़! और इस में भी मुकम्मल खता उन लोगों की नहीं है, बक़ायेदा एक तहरीक चला कर और इस साज़िश को मुनज़्ज़म करके इस पर अमल किया गया कि किसी तरह लोगों की निगाह में उलमा और उन के फतवे की क़दर को खत्म किया जाए, बा ज़ाब्ता पैसे दे कर आलिम नुमा, लम्बी रीशों वाले हज़रात खरीदे गये और उन से ऐसे फतवे भी लिखवाए गये कि जिस से अवाम का एतिमाद अपने उलमा से उठ जाए। जैसे ही मोअतबर आलिम ने किसी जदीद मसले पर फतवा सादिर फरमाया, फौरन उन फरोख्त शुदा हज़रात की खिदमत ली गई और किसी भी तरह बस उस आलिम के सादिर शुदा हुक्म के खिलाफ तहरीर लिखवाई गई और मुशतहिर कर दी गई। अब अवाम इस शशो बंज में कि मुफ्ती उनके नाम के आगे भी लिखा है और अल्लामा उन साहब के नाम को भी ज़ीनत दे रहा है आखिर मानों तो किस की। ऐसे में आप ने एक बहुत खतरनाक जुमला सुना होगा लोगों की ज़बानी, "अरे, उनका काम ही ऐसे फतवे देना है बस!"। इस मुनज़्ज़म साज़िश का मुनज़्ज़म जवाब देना भी बहुत ज़रूरी है और दोबारा से उलमा का एतिमाद अवाम मे क़ायम करना भी लाज़मी है। खास तौर से उन फरोख्त शुदा, ज़र-परस्त मौलवियों की निशान देही की जाए और फिर हर नये मसअले में बहुत एहतियात के साथ हर साज़िश को भांप कर उसका तदारुक किया जाए ताकि आवाम में भी किसी तरह का खल्फशार ना हो।

(4)-इस्नाद या शोहरत(Credibility Vs Popularity)

माहेरीन ए ज़राये इबलाग़ और फलासफ़ा ने इस पर बहुत तौर तवील कलाम किया है कि क्या शोहरत ही मुअतबर होने की सनद है? मैं उस खुदा-दाद

मक़बूलियत की बात नहीं कर रहा जो औलिया का खास्सा होती है बल्कि मैं तो उस शोहरत की बात कर रहा हूँ जो आज कल सोशल मीडिया के ज़रिये यतीम-उल-इल्म लोगों को भी मिल गई है, और दुनिया उन्हें इस्लामिक स्कालर, मुजद्दिद, मुफक्किर, बैगन की सब्ज़ी और पता नहीं क्या-क्या बुलाने लगी है। अच्छा फिर मैं इस बात का भी दावा कर सकता हूँ कि सलफ से खलफ तक कभी हमारे उलमा और दानिशवरान ने ऐसी सस्ती शोहरत को मियार नहीं बनाया, अपने ज़माने में बहुत से गुमराहों के पीछे भी एक लम्बी भीड़ थी, बल्कि वक़्त के खलीफा कहे जाने वाले भी उनकी झोली में आकर बैठ गये, मगर उस वक़्त में भी अगरचे हक़ एक ही आदमी कह रहा था मगर हक़ वही था।

मुअ़तज़िला और इमाम अहमद बिन हन्बल रदिअल्लाहु अन्हू की मिसाल हम सब जानते हैं। इसी मसअले पर माहेरीन ए इब्लाग ने काफी दिक्कत के साथ तहक़ीक़ की है और काफी हैरत अंगेज़ नताइज भी बरामद किये हैं जिस का लुब्बे लुबाब यही है हमें किसी की भी शोहरत को उस के हक़ पर होने का मियार हरगिज़ नहीं मानना चाहिए[2]

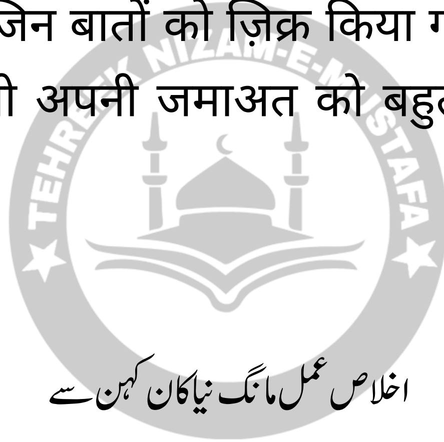
खास तौर पर जब हमें पता है कि हमारा तरीक़ा हमारा मसलक कुरआन, हदीस, इजमा, अक़्वाल ए अयम्मा को हमारे लिए मशअले राह बताता है। इस तफसील पर ये कहना भी बेजा ना होगा कि अगर आप किसी को कुछ कहता पायें तो पहले उसकी बात को अपने मसलक पर पेश करें, नाकि पहले उस की शोहरत देख कर मुतास्सिर हो जायें और फिर खुद से सवाल करें कि अरे! अगर ये इतना ही गुमराह होता तो उस के इतने मानने वाले, चाहने वाले, इतने फौलोवर्स क्यूं होते? जान लो:

दस्तार के हर पेंच की तहक़ीक़ है लाज़िम

हर साहबे दस्तार मुअज़्ज़ज़ नहीं होता[ख]

आखिर कलाम में ये ज़िक्र करना ज़रूरी है कि ये जितने भी मसाइल पेश किये गये, ये तो बस एक झलक हैं, मुकम्मल तस्वीर कशी के लिए तो दफ्तर के दफ्तर दरकार हैं।

दुनिया में इस वक़्त इतना कुछ चल रहा है कि हर मसअले, हर बात को इहाता ए तहरीर में लाना भी मुश्किल है, खास करके जब मैने इतने वसीअ़ मौज़ू का इंतिखाब किया जिस का ताल्लुक़ एक फर्द से नहीं बल्कि एक पूरी जमाअ़त से है। अगर जिन बातों को ज़िक्र किया गया, पहले उन्हीं का हम तदारुक कर लें तब भी अपनी जमाअत को बहुत बड़े नुक़सान से बचा सकते हैं।



اخلاص عمل مانگ نیاکان کہن سے

شاہاں چہ عجب گر بنوازند گدا را[ग]

Refrences:

1.BJM, RESEARCH ESSAY, Jan B. Schmutz, Laurenz L.& Tanja Manser : LINK

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6747874/

2.Essay For Research, Jaggi Ruchi, Reference:

Jaggi, Ruchi. (2009). Popularity vs. Credibility: An analysis of public perception of sensationalism in Indian television news. IMS Manthan. 4. 171-179.

अशआर

क) आमिर सिद्दीक़ी ग़ज़ल

ख) न मालूम शायर

ग) मुहम्मद इक़बाल , डॉक्टर , अरमग़ान ए हिजाज़ , बूढ़े बलोच की नसीहत बेटे को

तक़लीद ज़रूरी क्यूं?

:मुहम्मद हस्सान रज़ा राईनी

गैर मुक़ल्लेदीन यानी तक़लीद का इन्कार करने वाले ये दावा करते हैं कि हमारे लिये क़ुरआन और हदीस काफी है हम क़ुरआन और हदीस को खुद से समझ कर दीन पर अमल कर सकते हैं। तक़लीद शिर्क है बाज़ हराम कहते हैं अगर इन की ये बात मानी जाए तो सवाल पैदा होता है कि क़ुरआन के साथ हदीस भी क्यूं? सिर्फ क़ुरआन ही काफी क्यूं नहीं हालाँकि क़ुरआन में साफ़ तौर से अल्लाह तआला ने फरमाया:

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ

और हमने तुम पर ये क़ुरआन उतारा कि हर चीज़ का रौशन बयान है

(सूरह नहल: 83)

और फरमाया:

مَّا فَرَّطْنَا فِي الْكِتَابِ مِن شَيْءٍ

(سورة الأنعام: ٣٨)

हम ने इस में कुछ उठा ना रखा

तो जब क़ुरआने मजीद ये बात वाज़ेह कर चुका कि इस में हर चीज़ का रौशन बयान है तो फिर हदीस की ज़रूरत क्यूँ? फिर सारे मसाइल का हल

क़ुरआन से ही होना चाहिए था लेकिन गैर मुक़ल्लेदीन सिर्फ क़ुरआन पर इकतिफा नहीं करते ऐसा क्यूं? ये एक एतिराज़ है गैर मुक़ल्लेदीन पर। अहले क़ुरआन और अब्दुल्लाह चक्ड़ालवी के पैरोकार ने गैर मुक़ल्लेदीन से अगर सवाल कर लिया तो गैर मुक़ल्लेदीन का क्या जवाब होगा?

सिर्फ क़ुरआन और हदीस का नाम लेने वाले भी खुद क़ुरआन और हदीस के मुन्किर हैं वो इस लिए कि जब किसी इज्तिहादी मसाइल की बात आती है तो ये लोग क़ुरआन और हदीस की तरफ रुख नहीं करते बल्कि अपने पेशवाओं इब्ने तैमिया, क़ाज़ी शौकानी, इब्ने क़य्यम जौज़ी, सिद्दीक़ हसन खान भोपाली, नासिरूद्दीन अल्बानी, डिप्टी नज़ीर अहमद देहल्वी वगैरह का दरवाज़ा खटखटाते हुए नज़र आते हैं और उन के अक़वाल को बे चूनों चरा क़ुबूल करते हैं और इस पर तुर्फ़ा तमाशा ये कि जब इनके पेशवाओ की कुतुब को खंगाला जाए तो जा-बजा किसी मसअले को बयान करते हुए अयम्मा ए अरबआ़ के अक़वाल का सहारा लिया गया है। और जब हम कहते हैं कि अयम्मा ए मुज्तहेदीन हज़रत इमाम ए आज़म, हज़रत इमाम मालिक, हज़रत इमाम शाफई, हज़रत इमाम अहमद बिन हन्बल रदिअल्लाहु अन्हुम ने भी क़ुरआन और हदीस से मसाइल का इस्तिम्बात किया है इस लिये हम उन हज़रात में से किसी एक की तक़लीद करते हैं तो कहते हैं तक़लीद शिर्क है तक़लीद हराम है क़ुरआन और हदीस के होते हुए क़ौल ए इमाम की कोई हैसियत नहीं, ये है गैर मुक़ल्लेदीन की हक़ीक़त।

तक़लीद क्या है:

तक़लीद का इस्तिलाही और शरई मायना ये है,

أخذ قول الامام بلا مطالبة الدليل

दलील के मुताल्बे के बगैर इमाम के क़ौल को मान लेना इसे तक़्लीद कहा जाता है

यानी साइल ने किसी मसअले के बारे में किसी मुजतहिद से सवाल किया तो उस ने उस का हुक्म बयान कर दिया हालाँकि उस हुक्म के पीछे दलील भी मौजूद थी लेकिन साइल ने दलील का मुताल्बा नहीं किया और बगैर दलील पूछे बताये गये हुक्म पर अमल किया ये साइल के लिये तक़्लीद कहलाएगा।

क्यूंकि एक आम मुसलमान को हुक्म का पता होना चाहिए कि फलां काम मेरे लिये हलाल है या हराम, अगर हलाल है तो उसको करने का तरीक़ा क्या है बस। उसे दलील की कोई ज़रूरत नहीं उस का फहम और इदराक इतना नहीं कि वो दलील को समझ सके। इसलिये उसे तमाम परेशानियों से बचाते हुए एक आसान राह फराहम कर दी जाती है।

लोगों से उनकी अक़्लों के मुताबिक़ बात करना चाहिए नाकि अपनी अक़्ल के मुताबिक़। उलमा का काम अवाम को पेचीदगी में डालना नहीं होता बल्कि उनके लिये आसानियां पैदा करना होता है। अल्लाह तआला हम से आसानी चहता है ना कि दुशवारी, बिलावजह की मुश्क़िलात में अवाम को डाल देना ये अच्छी बात नहीं।

क़ुरआन और हदीस में सब कुछ होने का मतलब:

गैर मुक़ल्लेदीन कहते हैं कि क़ुरआन और हदीस में सब कुछ मौजूद है तो हम किसी इमाम की तक़लीद क्यूं करें?

बेशक हर शय का खुला बयान क़ुरआन में मौजूद है लेकिन हर शख़्स में ये क़ुदरत नहीं कि क़ुरआन मजीद से अहकाम का इस्तिमबात कर सके अल्लाह जिसे चाहता है उसे ये क़ुदरत अता करता है। ऐसे ही हदीस शरीफ़ में सब कुछ है लेकिन हदीस को समझने के लिये दीगर उमूर की ज़रूरत होती है हर शख़्स उस का मलका नहीं रखता। क़ुरआन से मसाइल का इस्तिमबात करने के लिये इमाम शाफई जैसे बेमिस्ल फक़ीह और मुहद्दिस की ज़रूरत होती है आप का एक मशहूर क़ौल है बयान किया जाता है,

ذكر أن الشافعي رحمه الله كان جالساً في المسجد الحرام فقال: «لا تسألوني عن شيء إلا أجبتكم فيه من كتاب الله تعالى» فقال رجل: ماتقول في المحرم إذا قتل الزنبور؟

कि आप मस्जिद ए हराम में बैठे हुए थे आप ने फरमाया जो तुम मुझसे किसी चीज़ के बारे में सवाल करोगे तो मैं उस का किताबुल्लाह से जवाब दुंगा, तो मजमे में से एक शख़्स ने पूछा कि हालत ए एहराम में अगर कोई भड़(मक्खी) को मार दे तो उस का क्या हुक्म है?

فقال: لا شيء عليه

आपने फरमाया उस पर कुछ नहीं है (यानी भड़ को मार सकता है दम लाज़िम नहीं आएगा)

فقال: أين هذا في كتاب الله؟

तो उस शख़्स ने कहा क़ुरआन में इसका हुक्म कहाँ है?

अब इमाम शाफ़ई का जवाब देने का अन्दाज़ देखें और आप का तरीक़ा ए इस्तिदलाल देखें आपने फरमाया अल्लाह फरमाता है

فقال: قال الله تعالى: { وَمَا آتاكم الرسول فَخُذُوهُ }

जो मेरे रसूल अलैह सलाम तुम्हें दें वो ले लो

ثم ذكر إسناداً إلى النبي صلى الله عليه وسلم أنه قال: "عليكم بسنتي وسنة الخلفاء

الراشدين من بعدي "

आगे फरमाने लगे कि नबी ﷺ ने फरमाया, मेरे बाद तुम पर मेरी और मेरे खुलफ़ा ए राशिदीन की इक़्तिदा लाज़िम है।

यानी क़ुरआन मजीद ने फरमाया जो रसूल तुम्हें दें वो ले लो, रसूल ए करीम ﷺ ने हमें खुलफ़ा ए राशिदीन की इक़्तिदा का हुक्म दिया

ثم ذكر إسناداً إلى عمر رضي الله عنه أنه قال: للمحرم قتل الزنبور

आगे फरमाने लगे कि हज़रत उमर रदीअल्लाहु अन्हू ने मुहरिम को भड़ मारने का हुक्म दिया था।

(التفسير الكبير، سورة الأنعام:٣٨)

यानी हालत ए एहराम में भड़ को मारना जाइज़ है।ये दीन को समझने का अंदाज़ है, क़ुरआन ने हदीस की तरफ मुतावज्जेह किया और हदीस ने सहाबी के क़ौल की तरफ।

तो जिस तरीक़े से क़ुरआन मजीद से ऐसे मसाइल निकाले जाएं उस को क़यास और राये से ताबीर किया जाता है।

राये से मुराद किसी खुवाहिश परस्त की राये नही। राये से मुराद किसी ज़िद्दी, जाहिल और हठधर्म की राये नहीं

राये से मुराद उस शख़्स की राये है जो क़ुरआन और हदीस में महारत ए ताम्मा रखता हो जो नुसूसे क़ुरआन के तमाम अहकाम से वाक़िफ़ हो नासिख और मन्सूख का हुक्म जानता हो हदीस के तमाम अहकाम का उसको इल्म हो।

हज़रत इमाम ए आज़म रदिअल्लाहु अन्हू का तरीक़ा ए इस्तिदलाल:

जिस वक़्त अबू जाफर मन्सूर ने इमाम ए आज़म अबू हनीफ़ा रदीअल्लाहू अन्हू को बुला कर कहा कि आप अपनी राये से दीन को बदलना चाहते हो तो आप ने फरमाया

कि ये सब झूठ है। मैं इस तरह मसाइल का इस्तिम्बात करता हूँ

إنما أعمل أولاً بكتاب الله ثم بسنة رسول الله صلى الله عليه وسلم ثم بأقضية أبي بكر وعمر وعثمان وعلي رضي الله عنهم ثم بأقضية بقية الصحابة ثم أقيس

(الميزان الكبرى)

जब भी मैं कोई मसअला हल करता हूँ तो सबसे पहले किताब-उल्लाह पर अमल करता हूँ फिर अगर किताब-उल्लाह में वाज़ेह मसअले का हल ना पा सकूँ तो मैं सुन्नत ए रसूल ﷺ में मसअले का हल तलाश करता हूँ फिर अगर सुन्नत से भी उस मसअले का हल ना पा सकूँ तो खुलफ़ा ए राशिदीन हज़रत अबू बकर, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, हज़रत अली रदिअल्लाहू अन्हूम के फैसलों के मुताबिक़ मसअले का हल तलाश करता हूँ फिर फरमाने लगे अगर इन हज़रात के फैसलों में मुझे हल ना मिले तो बाक़ी सहाबा ए किराम के फैसले ढूंढता हूँ अगर फिर भी हल ना मिल सके तो अपनी राये से मसला बयान करता हूँ।

कितना मोहतात और अहसन तरीक़ा है हज़रत इमाम ए आज़म रदिअल्लाहु अन्हू का मसाइल के हल करने का।

इस तरीक़ा ए इस्तिद्लाल की मिसाल सहाबा ए किराम के दौर में भी मिलती है।

كان ابن عباس رضي الله عنهما إذا سئل عن شيء فإن كان في كتاب الله تعالى قال به و إن لم يكن فى كتاب الله عز وجل و كان عن رسول الله صلى الله عليه وسلم أخبر به و إن لم يكن فى كتاب الله ولا في قضاء رسول الله صلى الله عليه وسلم و كان عن أبي بكر وعمر رضي الله عنهما أخذ به فإن لم يكن عنهما أجتهد رأيه

(المطالب العالية بزوائد المسانيد الثمانية، ج ۱۰، ۲۱۸۰)

हज़रत इब्ने अब्बास रदिअल्लाहू अन्हू से किसी शय के बारे में पूछा जाता तो अगर वो शय कुरआन में होती तो आप उस का क़ौल कर देते, अगर उसको किताब-उल्लाह में ना पाते तो हदीस ए रसूल ﷺ से उस का हल बयान कर देते, अगर किताब-उल्लाह और हुज़ूर ﷺ के फ़ैसलों में भी उसका हल नहीं पाते तो हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रदिअल्लाहू अन्हुमा के फतवों पर अमल करते।अगर शैखैन के फतवों में उस का हल नहीं मिलता तो अपनी राये से मसअले का हल बयान करते।

तो साबित हुआ हर राये और क़यास मज़मूम नहीं बल्कि वो मज़मूम है जो क़ुरआन और हदीस के खिलाफ़ हो और अयम्मा ए मुज्तहेदीन खास तौर से इमाम ए आज़म रदिअल्लाहु अन्हू ने कभी भी किसी मसअले को बयान करते हुए क़ुरआन और हदीस और सहाबा के फैसलों को तर्क नहीं किया हाँ अगर वहां उस का हल नहीं मिल पाया तो आपने अपनी राये पेश की और उस राये के पीछे भी क़ुरआन और हदीस से दलाइल होते थे।

इस तरह फिक़्ह ए हनफी मुदव्वन हुई और आज उम्मत की अकसरियत इस पर अमल पैरा है। याद रहे तक़लीद, इज्तेहादी और फुरूई मसाइल में की जाती है। अक़ाइद और जिन चीज़ों का हलाल या हराम होना नुसूस ए क़तईया से साबित है उन में तक़लीद नहीं, यानी नमाज़, रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हैं तो इस में तक़लीद की हाजत नहीं ऐसे ही शराब, ज़िना हराम है। इसमें भी तक़्लीद की कोई ज़रूरत नहीं। तक़लीद उन अहकाम में है जिनका वाज़ेह बयान क़ुरआन और हदीस में नहीं।

तक़्लीद ज़रूरी क्यूं? :

क़ुरआन और हदीस समझना हर कसो नाकस का काम नहीं तो फिर उस से अहकाम साबित करना किस क़दर दुशवार होगा इसलिये उम्मत ए मुस्लिमा के लिये अयम्मा ए मुज्तहेदीन ने अपने इजतेहाद और क़यास से क़ुरआन और हदीस के ज़रिये अहकाम को मुसतम्बत कर के चार निसाब अता किये इन चार में से किसी एक पर अमल करना हमारे लिये वाजिब हुआ और इस पर पूरी उम्मत का इजमा हुआ क्यूंकि अगर किसी एक पर अमल नहीं होगा तो बन्दा बेराह- रवी का शिकार हो जायेगा और कुछ अमल ना कर सकेगा।

वो चार निसाब ये हैं फिक़्ह ए हनफी, फिक़्ह ए मालिकी, फिक़्ह ए शाफ़ई, फिक़्ह ए हम्बली किसी एक फिक़्ह पर अमल पैरा हो कर इन्सान मंजिल ए मक़सूद को पा लेता है जो इन को छोड़ कर अपनी नफ्स का पैरो बना ज़िन्दगी भर भटकेगा और गुमराह हो कर मरेगा।

तमाम औलिया ए किराम, मुहद्दिसीन ए इज़ाम जैसे इमाम बुखारी, इमाम मुस्लिम, शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी, ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती, इमाम

मुहम्मद गज़ाली, दाता अली हुजवेरी, इमाम हज्र असक़लानी, इमाम तहावी, इमाम जलालुद्दीन सुयूती, हज़रत बायज़ीद बुस्तामी, हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया देहल्वी रदिअल्लाहु अन्हुम अजमाईन मुक़ल्लिद थे यानी किसी एक फिक़्ह पर अमल पैरा थे। तो इन अकाबिरीन ने तक़लीद को अपने लिये ज़रूरी समझा तो तक़लीद की, हालांकि ये वो नुफूस ए क़ुद्दसिया हैं जो खुद इजतेहाद कर सकते थे। मगर इन हज़रात ने इन्हीं चार को पसंद फरमाया।

तो बतायें आज कोई नाम निहाद उठकर तक़लीद को शिर्क और हराम कहे तो वो निरा जाहिल, हठधर्म, इजमा ए उम्मत का मुन्किर और तमाम सलफ स्वालेहीन, मुहद्दिसीन पर शिर्क और हराम का बोहतान बाँधता है।

जिस चीज़ पर उम्मत के अकाबेरीन, उलमा ए मुहद्दिसीन का इत्तेफाक़ तसलसुल के साथ चला आ रहा हो उसका इंकार करने वाला यक़ीनन गुमराह बद-दीन है।

अल्लाह हमें मज़हबे अहले सुन्नत वा जमाअ़त पर क़ायम और दायम रखे। गैर मुक़ल्लेदियत की बीमारी से बचाए और अकाबिरीन ए अहले सुन्नत के मनहज पर गामज़न रखने की तौफीक़ अता फरमाए।

अल्लाह हमारा हामी ओ नसिर हो।

वालिदैन की नाफरमानी से बचो।

:अज़मत हुसैन क़ादरी

الحمدلله رب العالمين والصلاة والسلام على سيدالمرسلين وعلى آله واصحابه

اجمعين۔ اما بعد

अज़ीज़ाने गिरामी। अल्लाह तबारक व तआला माबूदे हक़ीक़ी की फरमांबर्दारी और इताअत और इबादत के बाद कुछ हुक़ूक़ उल इबाद भी हैं, बन्दों के हुक़ूक़ में सब से पहले माँ बाप का दर्जा है और यही हमारा मौज़ूअ है अल्लाह तआला की और उस के रसूल ﷺ की इताअत के बाद इताअत ए वालिदैन भी इसी तरह वाजिब और ज़रूरी है जिस तरह इताअत ए खालिक़।

चुनांचे अल्लाह तबारक व तआला ने कुरआने मजीद में इरशाद फरमाया।

فلا تقل لهما اف ولا تنهرهما وقل لهما قولا كريما-

(پارہ نمبر 15آیت نمبر 23)

कि ऐ जवान बेटे इन वालिदैन को मत झिड़को कि इन्होंने तेरे लिये बहुत तकलीफें उठाई हैं बल्कि उफ तक ना कहो कि इस से उनको रंज पहुंचेगा और उन के दिल को तकलीफ़ होगी तो अल्लाह तबारक व तआला नाराज़ होगा।

और उन से नर्मी से बात करो उलमा का क़ौल है कि वालिदैन से इस तरह कलाम करना चाहिए जिस तरह खादिम अपने आक़ा से कलाम करता है और उन का नाम लेकर ना पुकारे कि ये अदब के खिलाफ है उन से नर्मी से पेश आ। शफक़त और मेहरबानी का सुलूक कर और उन के हक़ में रहमत के लिये दुआ करे क्यूंकि वो उन के एहसानात का बदला नहीं चुका सकता पस अल्लाह तआला से अर्ज़ करे कि ऐ अल्लाह इन्होंने मुझे बचपन में पाला पोसा और मैं इन का एहसान नहीं चुका सकता तो इस के बदले में उन पर अपनी रहमतें नाज़िल फरमा।

माशा अल्लाह कितनी अच्छी दुआ है कि अल्लाह तआला ने वालिदैन के एहसानात का शुक्रिया अदा करने का क्या अनोखा तरीक़ा बतला दिया कि उन के हक़ में रहमत तलब करो और उन की नाफर्मानी ना करो।

इस्लाम में माँ बाप का बहुत बुलंद मक़ाम है क़ुरआन ने माँ के फक़त इस एहसान को जो पेट में रख कर करती है

وھن علی وھن،

यानी मुसीबत पर मुसीबत कहा है।

फरमाने इलाही देखें।

ووصینا الانسان بوالدیہ حملتہ امہ وھنا علی وھن وفصالہ فی عامین ان اشکرلی ولوالدیک الی المصیر۔

(سورہ لقمان آیت نمبر 14،)

और हम ने आदमी को उस के माँ बाप के बारे में ताकीद फरमाई उस की माँ ने उसे पेट में रखा कमज़ोरी पर कमज़ोरी (मुसीबत पर मुसीबत) झेलती हुई और उस का दूध छूटना दो बरस की उम्र में है ये हक़ मान मेरा और अपने माँ बाप का आखिर मुझी तक आना है।

(कंज़ुल ईमान)

इसी लिये अल्लाह तआला ने वालिदैन के साथ एहसान और सुलूक करने का हुक्म दिया तो ये औलाद के लिये फराइज़ में शामिल है इस में कोताही करने वाला वालिदैन का ना फरमान और गुनाह ए कबीरा का मुरतक़िब शुमार होगा। अल्लाह तआला ने अपनी इबादत का हुक्म देते हुए वालिदैन के साथ हुस्न ए सुलूक का हुक्म दिया है जो इस बात पर दलालत करता है कि अल्लाह तआला की इताअत के बाद अहम तरीन फरीज़ा वालिदैन की इताअत है।अल्लाह तबारका व तआला कुरआने मजीद में इरशाद फरमाता है:

وقضی ربک الا تعبدو ا الا ایاہ وبالوالدین احساناً اما یبلغن عندک الکبر احدھما او

کلاھما فلا تقل لھما اف ولا تنھر ھما وقل لھما قولا کریما۔

और तेरा परवरदिगार साफ़ साफ़ हुक्म दे चुका है तुम उस के सिवा किसी और की इबादत ना करना। और माँ बाप के साथ एहसान करना, अगर तेरी मौजूदगी में उन में से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुंच जायें तो उन के आगे उफ तक ना कहना ना उन्हें डाँट डपट करना बल्कि उन के साथ अदब और एहतराम से बात करना।

इसी आयत ए करीमा में गौर करें कि अल्लाह तआला ने किस तरह अपनी इबादत का हुक्म देते हुए वालिदैन के साथ हुस्न ए सुलूक का हुक्म दिया है

इस आयत से वालिदैन के बुलंद तरीन मक़ाम का पता चलता है जिन की नाफरमानी तो दूर की बात उन्हें उफ तक कहने से मना किया गया है उन के लिये सरापा मोम बन जाने का हुक्म दिया गया है उन के बुलंद मक़ाम और मरतबे के सबब उनकी नाफरमानी करने वालों को अल्लाह तआला ने दुनिया ही में सज़ा देने का दस्तूर बना दिया है ताकि औलाद हुक़ूक़ ए वालिदैन की रियायत करे और उन मे हक़ तलफ़ी या कोताही से अल्लाह की सज़ा का खौफ खाए। मुताअद्दिद अहदीस ए सहीहा से मालूम होता है कि कुछ गुनाह इस क़दर शदीद हैं जिनकी शिद्दत के बाइस अल्लाह तआला ने उन की सज़ा दुनिया में ही रख दी है उन में से एक वालिदैन की नाफरमानी है इस सिलसिले में नबी ए करीम ﷺ के चन्द फरामीन मुलाहिज़ा फरमाएं।

اثنان یعجلھما اللہ فی الدنیا البغی وعقوق الوالدین (مستدرک حاکم)

दो ऐसे गुनाह हैं जिनकी सज़ा दुनिया में ही दी जाती है वो ज़ुल्म और वालिदैन की नाफरमानी है।

और दूसरी जगह इरशाद फरमाया।

ما من ذنب اجدر ان یعجل اللہ لصاحبہ العقوبۃ فی الدنیا مع ما یدخر لہ فی الآخرۃ من البغی وقطیعۃ الرحم. (صحیح ابن ماجہ)

ज़ुल्म और क़तऐ रहमी से बढ़ कर कोई गुनाह ऐसा नहीं जिस का मुरतक़िब ज्यादा लाइक़ है कि उस को अल्लाह की जानिब से दुनिया में जल्द सज़ा दी जाए और आखिरत के लिये भी उसे बाक़ी रखा जाए।

मज़कूरा हदीसों से मालूम होता है कि वालिदैन की नाफरमानी अल्लाह के नज़दीक बहुत बड़ा गुनाह है ऐसे गुनाहगारों को अल्लाह दुनिया में सख्त

सज़ा देता है ताकि माँ बाप भी नाफरमान की सज़ा देख लें जिन्होंने उस की परवरिश की और उस के लिये रहम ओ करम के बाज़ू बिछा दिये और जब अपने पाओं पर खड़ा हो गया खुद खाने और कमाने लगा तो अब माँ बाप के सारे एहसानात को भुल कर नाफरमानी और उन्हें तकलीफ देने पर उतर आया।

ना फरमान औलाद की दुनियावी सज़ा में जहां औलाद के लिये इबरत का सामान है वहीं उस में दुनिया वालों के लिये भी दर्स ए नसीहत है ताकि कोई औलाद माँ बाप का हक़ गसब ना करे उनकी खिदमत से मुँह ना फेरे उनके खिलाने पिलाने देख रेख में कोताही ना करे खास तौर से जब दोनो बूढ़े हो जायें चलने फिरने और काम काज करने और कमाने से माज़ूर हो जायें तो ऐसे वक़्त में औलाद उनकी मुकम्मल खिदमत करे वक़्त पर खाने का इन्तेज़ाम करे जो खुद खाए वो उन्हें भी खिलाए बदन, कपड़ा, जगह की सफाई का ख्याल करे पेशाब और पाखाने और ज़रुरियात ए ज़िन्दगी पर मदद करे।

मगर आम तौर से बूढ़े माँ बाप की खिदमत में कोताही देखने को मिलती है खुद भी वालिदैन की खिदमत से जी चुराते हैं और अपनी औलाद को भी किसी काम पर उन की मदद करने से मना करते हैं और आज कल की बीवी तो खूब समझती ही है कि सास-ससुर की खिदमत उनकी ज़िम्मेदारी नहीं एहसान का दर्जा तो बाद का है वाक़ई ये हमरे लिये लम्हा ए फिक्र है।

ये हदीसें हमें ये भी बतलाती हैं कि वालिदैन के साथ नाफरमानी करने वाला जहां दुनियावी सज़ा का मुस्तहिक़ है वहीं आखिरत में भी उसे दोबारा सज़ा मिलेगी जैसा कि इब्ने माजा की रिवायत में गुज़रा कि वो ऐसा गुनहागार है

जिसकी सज़ा आखिरत में बाक़ी तो है ही और इस लाइक़ है कि दुनियावी ज़िन्दगी में भी वो सख्त से सख्त सज़ा पाये।

यहाँ एक अहम सवाल पैदा होता है कि वालिदैन की नाफरमानी की सज़ा इस क़दर संगीन है कि दुनिया में भी ऐसे गुनाहगारों को माअ़लूल किया जाता है जबकि और भी गुनाह हैं मगर उनके मुताल्लिक़ ऐसी बात नहीं मिलती?

तो इसका जवाब ये है कि वालिदैन की नाफरमानी गुनाह ए कबीरा है और गुनाह ए कबीरा में भी इतना बड़ा गुनाह है कि इसकी सज़ा दुनिया से ही शुरु हो जाती है जो आखिर तक चलती रहेगी ये बात वालिदैन की नाफरमानी से मुताल्लिक़ अहादीस पर नज़र करने से मिलती है।

क़ुरआन में अल्लाह ने अपनी इबादत के साथ वालिदैन की इताअत का हुक्म दिया यानी हुक़ूक़-उल्लाह के बाद हुक़ूक़-उल-वालिदैन का दर्जा है हदीस में नबी ए करीम ﷺ ने वालिदैन की नाफरमानी को शिर्क के साथ ज़िक्र किया है आक़ा ﷺ का फरमान है।

الا اخبرکم باکبر الکبائر قالوا بلی یا رسول اللہ قال الاشراک باللہ وعقوق

الوالدین۔(صحیح البخاری 6273)

क्या मैं तम्हें सबसे बड़े गुनाह ना बतला दूँ लोगों ने अर्ज़ किया या रसूल-अल्लाह ﷺ क्यूँ नहीं? आपने फरमाया अल्लाह का शरीक ठहराना और वालिदैन की नाफरमानी करना।

इसका खुलासा ये हुआ कि इबादत के बाद इताअत ए वालिदैन का दर्जा है और गुनाह में शिर्क के बाद वालिदैन की नाफरमानी का दर्जा है यानी वाज़ेह

है कि वालिदैन के साथ नाफरमानी की मुख्तलिफ सज़ाएं वारिद हैं इन सज़ाओं का मतलब है कि वालिदैन का नाफरमान अल्लाह के नज़दीक बहुत ही बुरा आदमी है इसलिये उसकी सज़ा भी दुनिया और आखिरत में बहुत ही बुरी है और वालिदैन का खिदमत गुज़ार अच्छा आदमी है इसलिये वो दुनिया में भी अल्लाह तआला के खास फज़ल और एहसान का मुस्तहिक़ है और आखिरत में भी उसके लिये बेहतर से बेहतर बदला।

अल्लाह तबारका वा तआला से दुआ है कि हमें वालिदैन की खिदमत की तौफीक़ बख्शे और उनकी नाफरामानी से बचाए।



मुसीबत पर सब्र की फ़ज़ीलत

:मुहम्मद आदिल रज़ा मातिरुदी

सब्र की अहमियत व फ़ज़ीलत और जो इसकी इफ़ादियत है वो अपनी जगह मुसल्लम है क्योंकि इसकी अहमियत व अफ़ादियत से किसी को इंकार नहीं और इंकार भी क्यों हो जब के ख़ुद अल्लाह तआला ने क़ुरान पाक में तक़रीबन सत्तर मक़ामात पर सब्र का ज़िक्र फ़रमाया है।

इमाम राग़िब अस्फ़हानी "अल-मुफरिदात " में सब्र के माअ़नी तहरीर करते हैं:

"नफ़्स को उस चीज़ पर रोकना जिस पर रुकने का अक़्ल और शरियत तकाज़ा कर रही है या नफ़्स को उस चीज़ से बाज़ रखना जिस से बचने का अक़्ल और शरियत तकाज़ा कर रही हो।"

(المفردات، حرف الصاد) "

अल्लाह तआला को सब्र करने वाले महबूब और उनके साथ है। फ़रमान ए बारी तआला है:

وَ اللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ

(پارہ ۳، سورہ آلِ عمران، آیت: ۱۴۶)

तर्जुमा: और सब्र वाले अल्लाह को महबूब हैं।

दूसरे मक़ाम पर इरशाद ए बारी तआला है:

وَاصْبِرُوْاِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ

(پارہ۱۰، سورہ الانفال:۴٦)

तर्जुमा: और सब्र करो बेशक अल्लाह सब्र वालों के साथ है।

एक और मक़ाम पर सब्र के ताल्लुक़ से फ़रमान ए बारी तआला है:

اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ

(پارہ۲۳، سورہ زمر، آیت:۱۰)

तर्जुमा:- साबिरों ही को उनका सवाब भरपूर दिया जाएगा बे गिनती।

जब हम ग़ौर करते हैं तो मालूम होता है के देखने और पढ़ने में "सब्र" बज़ाहिर तीन हरफ़ी लफ़्ज़ है मगर यह अपने अन्दर हिम्मत, हौसला, बर्दाश्त, तहम्मुल, भलाई, ख़ैर,नरमी, सुकून और इत्मिनान की पूरी कायनात समाए हुए हैं।

सब्र और शुक्र दोनों इस्लामी तालीमात में क़लीदी मक़ाम के हामिल और साफ़ व अख़लाक़ हैं, इस्लाम ने उनको अपनाने पर बहुत ज़ोर दिया है, क़ुरान व हदीस में उन दोनों के ताल्लुक़ से जाबजा ताकी़दी व तरग़ीबी हिदायत मिलती हैं जिनका तफ़्सीली ज़िक्र आगे आ रहा है।

अहादीस में भी एक दो जगह नहीं बल्कि सैकड़ों मक़ाम पर सब्र व तहम्मुल और उसकी फ़ज़ीलत का ज़िक्र किया गया है।

अहादीस ए मुबारका में है:

हुज़ूर नबी ए रहमत शफ़ी ए उम्मत ﷺ का फ़रमान ए जन्नत निशान है के अल्लाह अज़्ज़वजल इरशाद फ़रमाता है:

जब मैं अपने किसी बन्दे को उसके जिस्म, माल या औलाद के ज़रिए आज़माइश में मुब्तिला करूं, फिर वो सब्रे जमील के साथ उसका इस्तक़बाल करे तो क़यामत के दिन मुझे हया आएगी के उसके लिए मीज़ान क़ायम करूं या उसका नामा ए आमाल खोलूं।

(نوادر الاصول)

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह तआ़ला अलैह "एहया उल उलूम" में हदीस पाक नक़ल करते हैं।:

हुज़ूर पाक ﷺ से ईमान के मुताल्लिक़ सवाल हुआ तो आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

सब्र और सख़ावत ईमान है। सब्र जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है।

(احیاء العلوم، جلد، ٤، صفحہ: ۲٦۷،۲٤٦، دعوت اسلامی)

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह तआ़ला अलैह सब्र की क़िस्में और उसकी क़द्र व मन्ज़िलत और रिफ़अत बयान करते हुए "مکاشفۃ القلوب" तहरीर फ़रमाते हैं:

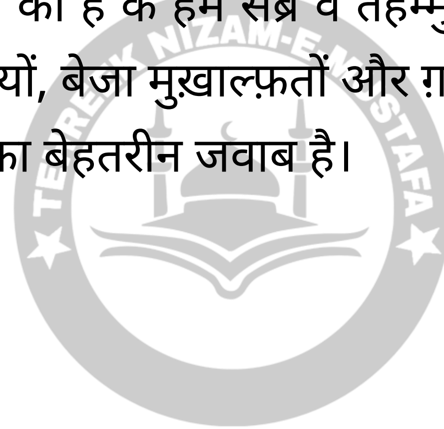
अल्लाह तआ़ला की इताअत पर सब्र करना हराम चीज़ों से रुक जाना तकलीफ़ पर सब्र करना और पहले सदमा पर सब्र करना वगैरह।"

जो शख़्स इबादते इलाही पर सब्र करता है और हर वक़्त इबादत में महव रहता है उसे क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला तीन सौ ऐसे दरजात अता करेगा जिनमें हर दर्जे का फ़ासला ज़मीन व आसमान के फ़ासले के बराबर होगा, जो अल्लाह तआ़ला की हराम की

हुई चीज़ों से सब्र करता है उसे छ: सौ दरजात अता होंगे जिनमें हर दर्जे का फ़ासला सातवें आसमान से सातवीं ज़मीन के फ़ासले के बराबर होगा जो मसायब पर सब्र करता है उसको सात सौ दरजात अता होंगे हर दर्जे का फ़ासला तहतुस्सरा से अर्शे अली के बराबर होगा।"

(مکاشفة القلوب، صفحہ:٤١، دعوت اسلامی)

सब्र की अहमियत व फ़ज़ीलत का अंदाज़ा इस से भी लगाया जा सकता है के ईमान में सब्र की वह अहमियत है जैसी जिस्म में सर की" सब्र करने से दुनियावी व उख़रवी दोनों फ़वायद हैं।" इनफ़रादी ज़िन्दगी हो या इज्तिमायी, घरेलू हो या मुआशरती, सब्र के बग़ैर ज़िन्दगी की किताब ना मुकम्मल है। आज ज़रूरत इस बात की है के हम सब्र व तहम्मुल की सवारी पर सवार रहें, मुसीबतों, परेशानियों, बेजा मुख़ाल्फ़तों और ग़मों का सामना हो भी तो सब्र उन तमाम चीज़ों का बेहतरीन जवाब है।



खुदकुशी हराम है

:मुहम्मद जावेद रज़ा मरकज़ी

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

आज कल खुदकुशी का रुझान इतना आम होता जा रहा है कि पूरी दुनिया में हर साल कई हज़ार अफ़राद अपने आप को अपने हाथों हलाक कर लेते हैं। बग़ैर सोचे समझे के उनके बाद उनके मां बाप भाई बहन और अहल व अयाल का क्या होगा? और अपने पीछे बहुत सवाल छोड़ जाते हैं।

दुनिया में बहुत से माहिरे नफ़्सियात ने कई कुतुब तहरीर कीं हैं जिन में इसके असबाब और इसकी रोकथाम की तजावीज़ तहरीर की हैं मगर यह काम रुकने के बावजूद बढ़ रहा है।

यह एक ऐसा फ़ेअल है जो हर समाज, हर तब्क़े में मज़मूम समझा जाता है।

इस्लाम की नज़र में खुदकुशी:

अल्लाह अज़्ज़वजल ने क़ुरान मजीद में उसके बारे में बड़ा सख़्त हुक्म सुनाया है के हर साहिबे ईमान का दिल दहल उठे। अल्लाह अज़्ज़वजल फ़रमाता है:

لَا تَقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا مَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّ ظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا

(سورہ النساء)

और अपनी जानों को क़त्ल न करो। और बेशक अल्लाह तुम पर मेहरबान है। और जो ज़ुल्म व ज़्यादती से ऐसा करेगा तो अनक़रीब हम उसे आग में दाख़िल करेंगे और यह अल्लाह पर बहुत आसान है।

यह दुनिया दारुल इम्तिहान है, हर वक़्त और हर मंज़िल पर आदमी का वास्ता नित नए मसाइल से पड़ता रहता है। वही शख़्स इस में कामयाब होता है जो हर तरह की परेशानियों का डट कर मुकाबला करे और ज़िन्दगी की आख़री मंज़िल तक पहुंच जाए। जो शख़्स इन मुश्किलात में सब्र का दामन छोड़ बैठे और ज़ल्दबाज़ी और बेसब्री में अपनी मताअ हयात ही को ख़त्म कर दे तो वो मौत के बाद वाली ज़िन्दगी को अपने ही हाथों बर्बाद कर लेता है।

फ़रमाने मुस्तफा ﷺ है:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी है सरकारे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया जिसने अपना गला घोंटा तो वह जहन्नुम की आग में अपना गला घोंटता रहेगा और जिस ने ख़ुद को नेज़ह मारा वो जहन्नुम की आग में ख़ुद को नेज़ह मारता रहेगा।

(بخاری کتاب الجنائز)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हु से एक और रिवायत है। सरकार आला मर्तबत ﷺ ने इरशाद फ़रमाया

जो पहाड़ से गिर कर ख़ुदकुशी करेगा वो नारे दोज़ख में हमेशा गिरता रहेगा और जो ज़हर खा कर ख़ुदकुशी करेगा वो जहन्नुम की आग में हमेशा ज़हर खाता रहेगा जिसने लोहे के हथियार से ख़ुदकुशी की की तो दोज़ख की आग में वह हथियार उसके हाथ में होगा और वह उससे अपने आप को हमेशा ज़ख्मी करता रहेगा।

(بخاری کتاب الطب)

हदीस नबवी में मुतअद्दिद मक़ामात में वारिद हुआ है के मौत की दुआ नहीं करनी चाहिए तो फिर यह कैसे मुमकिन है के मसायब व मुश्किलात और बीमारी से दो चार होने की सूरत में इस्लाम खुदकुशी की इजाज़त दे दे।

एक और रिवायत में है के:

एक शख़्स ने रसूल करीम ﷺ के साथ एक ग़ज़वह में बड़ी शुजाअत और बहादुरी का मुज़ाहिरा किया और हर महाज़ पर दुश्मनों का मुक़ाबला करता रहा उसकी बहादुरी को देख कर हर तरफ़ से तहसीन व तारीफ़ होने लगी बालाख़िर वह लड़ते लड़ते शदीद ज़ख्मी हो गया और ज़ख्म की तकलीफ़ बर्दाश्त न कर सका तो उसने अपनी ही तलवार की नोक से अपने सीने में पेवस्त कर ली जिससे उसकी मौत हो गई जिसके सबब वह जहन्नुमी ठहरा।

(मफ़हूम ए हदीस)

ख़ुदकुशी इस्लाम में हराम अशद हराम फ़ेअल है बद अंजाम गुनाह कबीरा जहन्नुम में ले जाने वाला काम है।

ख़ुदकुशी लोग करते क्यों हैं?

इस पर बहुत से मुफ़क्करीन ने बहुत सी आरा पेश की हैं और इसके बहुत से असबाब गिनाए हैं मगर हर एक को बयान में एक चीज़ क़द्रे मुश्तरक मालूम होती है और वो ज़हनी दबाव (डिप्रेशन) जिसके चलते आम तौर से लोग ऐसा क़दम उठाते हैं।

कभी कारोबार में नुकसान, घरेलू झगड़े, मोहब्बत के नाम पर या शदीद मुश्किलों से घबरा जाना।

इसके अलावा और भी बहुत सी वुजुहात हो सकती हैं मगर आम तौर से यह ज़्यादा देखने में आती हैं।

अगर हमारी क़ौम क़ुराने करीम को ग़ौर से पढ़े तो इन सबका इलाज मिल जाएगा।

क़ुरान में रब फ़रमाता है-

اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ تَطْمَىٕنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللّٰهِؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَىٕنُّ الْقُلُوْبُ(۲۸)

उन लोगों को हिदायत देता है जो ईमान लाए और उनके दिल अल्लाह की याद से चैन पाते हैं, सुन लो! अल्लाह की याद ही से दिल चैन पाते हैं।

बेशक अल्लाह अज़्ज़वजल का ज़िक्र करने से दिलों को चैन मिलता है इंसान डिप्रेशन का शिकार उस वक़्त होता है जब उसका दिल बेकरार व बेचैन होता है मगर अफ़सोस बड़ी तादाद डाक्टरों के पास दौड़ती है मगर इस क़ुरानी ऐलान से बेखबर हैं। कारोबार में नुक़सान, औलाद या किसी क़रीबी का दुनिया से रहलत फ़रमा जाना

तुम्हारा रब फ़रमाता है:

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ؕ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۙ(۱۵۵)

और हम ज़रूर तुम्हें कुछ डर और भूख से और कुछ मालों और जानों और फलों की कमी से आज़माएंगे और सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दो।

ऐ मुसलमान ज़रा देख के तेरा रब फ़रमा रहा है के वो तुझे ज़रूर आज़माएगा इस आज़माइश पर सब्र करने पर ख़ुशख़बरी भी सुना रहा है। मगर अफ़सोस के हम न ख़ुद क़ुरान की तरफ़ देख रहे हैं और न अपनी औलाद को क़ुरान का दर्स दे रहे हैं।

मोहब्बत के नाम पर जान देने वालों देखो तुम्हारा रब फ़रमाता है:

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ؕ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ

(النور)

मुसलमान मर्दों को हुक्म दो के अपनी निगाहें कुछ नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें, यह उनके लिए ज़्यादा पाकीज़ा है, बेशक अल्लाह उनके कामों से खबरदार है।

काश हम ख़ुद इस पर अमल करते और अपनी औलादों को भी इसका दर्स देते तो हमारी नौजवान नस्ल ज़रूर इस मग़रिबी तहज़ीब से महफ़ूज़ होती।

ख़ुदकुशी करने वाले के साथ न सिर्फ अल्लाह का मामला दर्दनाक होगा बल्कि दुनिया में भी ऐसे लोगों की कोई वक़अत नहीं होती और इसके बुरे नतायज से उसके घरवाले और अज़ीज़ व अक़ारिब दो चार होते हैं। ऐसे

लोगों के रिश्तेदारों से मुआशरे के दूसरे लोग ताल्लुक़ नहीं रखते, रिश्तेदारी करने में उनसे ख़ायफ़ होते हैं और उनके घरवालों के साथ तान व तशनीअ का मामला करते हैं। ख़ुदकुशी करने वाला तो चला जाता है मगर उसके इस ग़लत अमल से उसके अहबाब को कितना नुक़सान पहुंचता है इसका अंदाज़ा अगर हो जाए तो कोई भी अहले ईमान इस फ़ेअले हराम का मुरतकिब नहीं होगा। यही वजह है कि जब अल्लाह के रसूले करीम ﷺ को एक मुसलमान के खुदकुशी करने की ख़बर मिली तो आप इन्तेहाई ख़फ़ा हुए और फ़रमाया के मैं उसकी नमाज़ ए जनाज़ा नहीं पढ़ाऊंगा।

इस्लाम ने किसी भी हाल में खुदकुशी की इजाज़त नहीं दी। जिसने इंसान को पैदा किया, मां के शिकम से लेकर ज़िन्दगी के आख़री लम्हात तक उसकी हिफ़ाज़त व निगरानी फ़रमाई और सुकून की नेअ़मत से सरफ़राज़ किया, वही अपने बन्दों को मसायब में मुब्तिला करता है और वही उन्हें मुश्किलात से निकालता भी है। इंसान को जब ख़ुशी मिलती है तो वह ऐश करता है और जब परेशानी आती है तो वह उस से फ़रार की राह इख़्तियार करता है और अपने ऊपर मौत तारी करता है, यह कैसी बेवक़ूफी और नादानी है। कुछ लोग ख़ुदकुशी के हक़ में यह दलील देते हैं के इंसान अपनी जान का मालिक है और उसे इख़्तियार है के वह उसे ख़त्म कर दे या बाक़ी रखे। तरफ़ा तमाशा यह के आम हालात में तो इस अमल को वो पसंद नहीं करते मगर बीमारी और तकलीफ़ की हालत में इस अमल को बरोए कार लाने में कोई क़बाहत नहीं समझते और कहते हैं के ऐसा शख़्स ज़िन्दगी को इसलिए ख़त्म कर रहा है के वो तकलीफ़ का बायस बन गई है और उसकी वजह से वो सख़्त अज़ीयत महसूस कर रहा है, यह कितनी बोदी दलील है।

अल्लाह हर मुसलमान को इस से बचाए और बचने का बेहतरीन रास्ता इस्लामी तालीम ही है।



ज़बान की निगरानी कितनी मुफ़ीद?

:मुहम्मद आलिम रज़ा अत्तारी

इंसानी जिस्म में चंद आअ़ज़ा को बड़ी बुनियादी और उसूली हैसियत हासिल है मस्लन आँख, कान, दिल और ज़बान वगैरह, क्योंकि बिल्वास्ता या बिलावास्ता कई गुनाहों का इरतेकाब इन्हीं आअ़ज़ा से होता है।

अगर ज़बान के बारे में बात करें तो कहा जाता है के "90 फ़ीसद गुनाह ज़बान की वजह से होते हैं।"क्योंकि झूठ, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलौज, दिल आज़ारी वगैरह गुनाहों का सदूर ज़बान से होता है। एक सहाबी रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर ए अनवर ﷺ की बारगाह में हाज़िर हो कर अर्ज़ की:

आप मुझ पर सबसे ज़्यादा किस चीज़ का ख़ौफ़ रखते हैं? आपने अपनी ज़बाने अक़दस पकड़ कर इरशाद फ़रमाया: "इस (ज़बान) का।"

(ترمذی، ج ۴، ص ۱۸۴، حدیث:۲۴۱۸)

ज़बान ही इंसान को हलाकत के दहाने तक पहुंचा देती है और यही ज़बान इंसानी कामयाबी का सबब भी है। जन्नत में दाखिल होना या जहन्नम का ईंधन बनना हो! इस ज़बान का हर दो तरह के मुआमले में निहायत कलीदी किरदार है। ज़बान के मुताल्लिक़

चन्द अहम बातें पेश की जाती हैं।

1) तमाम आअ़ज़ा का दुरुस्त और न दुरुस्त रहना इसी ज़बान पर मौक़ूफ़ है चुनान्चे मरवी है के "**जब इंसान सुबह करता है तो तमाम आअ़ज़ा ज़बान से कहते हैं: "हम तुझे ख़ुदा का वास्ता देते हैं के तू सीधी रहना क्योंकि अगर तू सीधी रही तो हम सीधे रहेंगे और अगर तू टेढ़ी हो गई तो हम भी टेढ़े हो जाएंगे।**"

(ترمذی، ج ۴، ص ۱۸۳، حدیث:۲۴۱۵)

2) ज़बान की हिफ़ाज़त न करना आमाल के ज़ाय होने का सबब है क्योंकि ज़बान के इस्तेमाल में बे एहतियातियां लामहाला (लाज़मी) गुनाहों की तरफ़ ले जाने वाली हैं मस्लन झूठ, ग़ीबत, चुग़ली, गाली गलौज वगैरह। मक़ूला है के जो ज़्यादा बोलता है ज़्यादा गलतियां करता है।"

3) ज़बान की हिफ़ाज़त से इज़्ज़त व शान बरक़रार रहती है। एक बुज़ुर्ग का क़ौल है: अपनी ज़बान को इतना दराज़ मत करो के तुम्हारी इज़्ज़त व शान ख़राब हो जाए।

4) उख़रवी अंजाम को याद कर के ज़बान को तक़वा की आदत डालिए। हुज़ूर अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: **उल्मा और तल्बा से अपनी ज़बान को रोके रखो और अपनी ज़बान से लोगों की आबरू रेज़ी (यानी बेइ़ज़्ज़ती) न करो वरना जहन्नम के कुत्ते तुम्हें फाड़ डालेंगे।**

(الترغیب والترھیب، ج ۱، ص ۵۰، رقم:۵۹)

ख़ामोशी की फ़ज़ीलत पर चार फ़रामीने मुस्तफ़ा:

مَنْ صَمَتَ نَجَا

1) यानी जो चुप रहा उसने निजात पायी।

(ترمذی ج۴ص۲۲۵ حدیث ۲۵۰۹)

اَلصَّمْتُ سَیِّدُ الْاَخْلَاقِ

2) ख़ामोशी अख़लाक़ की सरदार है।

(اَلْفِردَوس بمأثور الْخطّاب ج۲ص۴۱۷حدیث۳۸۵۰)

اَلصَّمْتُ اَرْفَعُ الْعِبَادَۃِ

3) ख़ामोशी आला दर्जे की इबादत है।

(اَیضاً حدیث۳۸۴۹)

4)आदमी की ख़ामोशी पर क़ायम रहना 60 साल की इबादत से बेहतर है।

(شُعَبُ الْاِیمان ج۴ص۲۴۵ حدیث ۴۹۵۳)

मुफ़स्सिर ए शहीर हकीम उल उम्मत हज़रत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान अलैह रहमा चौथी हदीस पाक के तहत फ़रमाते हैं: यानी अगर कोई शख़्स साठ साल इबादत करे मगर ज़्यादा बातें भी करे, अच्छी बुरी बात में तमीज़ न करे इससे यह बेहतर है कि थोड़ी देर ख़ामोश रहे क्योंकि ख़ामोशी में फ़िक्र भी हुई, इस्लाहे नफ़्स भी, मअ़रिफ़ व हक़ायक़ में इस्तिफ़राक़ भी, ज़िक्रे ख़फ़ी के समुन्द्र में ग़ोता लगाना भी, मुराक़्बा भी।

(مرأۃالمناجیح ج۶ص۳۶۱ مختصرا)

फ़ालतू बातों के चार लरज़ा ख़ैज़ नुक़सानात:

"गप शप" करने वाले, बात का बतंगड़ बनाने वाले, बल्कि फ़िज़ूल बात चूंकि जायज़ है गुनाह नहीं यह सोच कर या वैसे ही जो कभी कभार ही फ़ुज़ूल बातें करते हैं वो भी फ़ुज़ूल बातों के मुतअल्लिक़ हुज्जतुल इस्लाम हज़रत सय्यदुना इमाम अबु हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली अलैह रहमा के तास्सुरात मुलाहिज़ा फ़रमाएं और अपने आप को फ़ुज़ूल गुफ्तगू के इन चार नुक़सानात से डराएं। आप रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने इन चार वुजूहात की पुर फ़ुज़ूल बातों की मज़म्मत फ़रमाई है:

1) फ़ुज़ूल बातें किरामन कातेबीन (यानी आमाल लिखने वाले बुज़ुर्ग फ़रिश्तों) को लिखनी पड़ती हैं, लिहाज़ा आदमी को चाहिए के उनसे शर्म करे और उन्हें फ़ुज़ूल बातें लिखने की ज़हमत न दे।

अल्लाह अज़्ज़वजल पारह 26 सूरह काफ आयत नम्बर 18 में इरशाद फ़रमाता है:

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ

तर्जुमा कन्ज़ुल ईमान: कोई बात वो ज़बान से नहीं निकालता के उसके पास एक मुहाफ़िज़ तैयार न बैठा हो।

2) यह बात अच्छी नहीं के फ़ुज़ूल बातों से भरपूर आमाल नामा अल्लाह अज़्ज़वजल की बारगाह में पेश हो।

3) अल्लाह अज़्ज़वजल के दरबार में तमाम मख़लूक़ के सामने बन्दे को हुक्म होगा के अपना आधमाल नामा पढ़ कर सुनाओ! अब क़यामत की खौफ़नाक सख़्तियां उसके सामने होंगी, इन्सान बरहना (यानी नंगा) होगा,

सख़्त प्यासा होगा, भूख से कमर टूट रही होगी, जन्नत में जाने से रोक दिया गया होगा और हर क़िस्म की राहत उस प पर बन्द कर दी गई होगी, ग़ौर तो कीजिए ऐसे तकलीफ़ देह हालात में फ़ुज़ूल बातों से भरपूर आ़माल नामा पढ़ कर सुनाना किस क़दर परेशान कुन होगा!

(हिसाब लगाइए। अगर रोज़ाना सिर्फ 15 मिनट भी फ़ुज़ूल बातें की हैं तो एक महीने के साढ़े सात घंटे हुए और एक साल के 90 घंटे, बिल्फ़र्ज़ किसी ने पचास साल तक रोज़ाना औसतन 15 मिनट फ़ुज़ूल गुफ़्तगूकी तो 187 दिन 12 घंटे हुए यानी छः माह से ज़ायद, तो ग़ौर फ़रमाइए! क़यामत का हौलनाक दिन जिस में सूरज सिर्फ एक मील पर रह कर आग बरसा रहा होगा, ऐसी होश रुबा गर्मी में मुसलसल बिला वक़्फ़ा छः माह तक कौन "आमाल नामा" पढ़ कर सुना सकेगा! यह तो सिर्फ़ यौमिया पन्द्रह मिनट की फ़ुज़ूल गोई का हिसाब है। हमारे तो बसा औक़ात कई कई घंटे दोस्तों के साथ " फ़ुज़ूल गपशप" में गुज़र जाते हैं, गुनाहों भरी बातें और दीगर बुराइयां मज़ीद बरां)

4) बरोज़े क़यामत बन्दे को फ़ुज़ूल बातों पर मलामत की जाएगी और उसको शर्मिंदा किया जाएगा। बन्दे के पास इसका कोई जवाब न होगा और वह अल्लाह अज़्ज़वजल के सामने शर्म व निदामत से पानी पानी हो जाएगा।

(مِنهاجُ العابِدین ص٦٧)

अगर जन्नत दरकार हो तो...

हज़रत सय्यदुना ईसा रूहुल्लाह अला नबिय्यना व अलैहि अस्सालातो वस्सलाम की ख़िदमते बाअज़मत में लोगों ने अर्ज़ किया: कोई ऐसा अमल बताइए के जिस से जन्नत

मिले। इरशाद फ़रमाया: "कभी बोलो मत।" अर्ज़ की: यह तो नहीं हो सकता। फ़रमाया: " अच्छी बात के सिवा ज़बान से कुछ मत निकालो।"

(إحیاءُ الْعُلوم ج٣ ص١٣٦)

ख़ामोशी ईमान की सलामती का ज़रिया है:

जिस बदनसीब की ज़बान क़ैन्ची की तरह हर किसी की बात काटती चली जाती है, वह दूसरे की बात अच्छी तरह समझने से महरूम रहेगा बल्कि बातूनी शख़्स के लिए यह भी ख़तरा रहता है के बकबक करते हुए ज़बान से मआ़ज़ अल्लाह अज़्ज़वजल कुफ़्रियात निकल जाएं। चुनान्चे हुज्जतुल इस्लाम हज़रत सय्यदुना इमाम अबु हामिद मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली अलैहि रहमा "इहया अल उलूम" में बअज़ बुज़ुर्गों का क़ौल नक़ल करते हुए फ़रमाते हैं: ख़ामोश रहने वाले शख़्स में दो ख़ूबियां जमा हो जाती हैं

1) उसका दीन सलामत रहता है।

2) दूसरे की बात अच्छी तरह समझ लेता है।

(إحیاءُ الْعُلوم ج٣ ص١٣٧)

माल की हिफ़ाज़त आसान है मगर ज़बान....

हज़रत सय्यदुना मुहम्मद बिन वासे़अ रहमतुल्लाह अलैह ने हज़रत सय्यदुना मालिक बिन दीनार रहमतुल्लाह अलैह से फ़रमाया:

इंसान के लिए ज़बान की हिफ़ाज़त माल की हिफ़ाज़त से ज़्यादा दुश्वार है।

(اِتحافُ السّادَة للزّبیدی ج٩ص١٤٤)

अफ़सोस! के अपने माल की हिफ़ाज़त के मुआमले में उमूमन हर एक होशियार होता है, हालांकि माल ज़ाया हो भी गया तो सिर्फ़ दुनिया का नुक़सान है। सद करोड़ अफ़सोस! ज़बान की हिफ़ाज़त की सोच निहायत कम रह गई है, यक़ीनन ज़बान की हिफ़ाज़त न करने के सबब दुनिया के नुक़सान के साथ साथ आख़िरत की बर्बादी का भी पूरा पूरा इमकान है।

ज़बान के बेजा इस्तेमाल के सबब घरेलू झगड़े:

बसा औक़ात ज़बान के ग़लत इस्तेमाल की वजह से घरों में फूट पड़ जाती है और दायमी झगड़े जन्म ले लेते हैं ख़ास कर अगर घर की औरतें सही मायनों में अपनी ज़बान पर लगाम लगालें तो उनकी घरेलू परेशानियां, रिश्तेदारों से नाचाक़ियां और सास-बहू की लड़ाईयां वगैरह बहुत सारे मसाइल हल हो जाएं और सारे का सारा ख़ानदान अमन का गहवारा बन जाए क्योंकि ज़्यादातर घरेलू झगड़े ज़बान के बेजा इस्तेमाल ही के सबब होते हैं।

सास बहू का झगड़ा निमटाने का नुस्ख़ा:

सास अगर डाँट डपट करती हो तो "बहू" को चाहिए के सिर्फ़ और सिर्फ़ सब्र करे, अपनी सास को जवाबन एक लफ्ज़ भी न कहे और अपने शौहर को भी शिकायत न करे, अपने मैके में भी कुछ न बताए बल्कि मुंह भी न चढाए, नीज़ अपने बच्चों या बर्तनों वगैरह पर भी गुस्सा न निकालें। इंशाअल्लाह अज़्ज़वजल कामयाबी उसके क़दम चूम लेगी।

कहा जाता है: "एक चुप सौ को हराए।" इसी तरह अगर कोई बहू अपनी "सास" से झगड़ा करती हो तो सास को चाहिए के बिल्कुल जवाबी कार्रवाई न करे, सिर्फ़ ख़ामोशी ही इख़्तियार करे घर के किसी फ़र्द हत्ता के अपने बेटे को भी शिकायत न करे। इंशाअल्लाह अज़्ज़वजल इस कहावत: "एक चुप सौ सुख" के मुताबिक सुख चैन पाएगी। जी हां अगर सही मायनों में इस नुस्खे पर अमल क्या गया तो इंशाअल्लाह अज़्ज़वजल जल्द ही सास बहू की लड़ाई ख़त्म हो जाएगी और घर अमन का गहवारा बन जाएगा।

अल्लाह पाक हमें ज़बान के ग़लत इस्तेमाल के सबब होने वाले दुनियावी और उख़रवी नुक़सानात से महफ़ूज़ फ़रमाए!

آمین بجاہ النبی الامین ﷺ۔



ख़ुलूस क़ीमती होता है, लिबास नहीं!!

:ग़ुलाम मुस्तफा नईमी

औरेटरी क्लब सामेईन से खचाखच भरा था.... आज क्लब में "इस्लामी मुसावात" के उनवान पर मुल्क के मअ़ारूफ़ सोशल वर्कर नुवैद क़मर साहब का खिताब था। नुवेद साहब जहां नब्ज़ शनास स्पीकर के तौर पर मुतार्रुफ़ हैं.... वहीं सोशल वर्कर के तौर पर भी शनाख़्त रखते हैं।

नुवेद साहब की ख़ितावत का जादू सर चढ़ कर बोल रहा था... अल्फ़ाज़ का इंतख़ाब, लहजे की चाशनी और सलीक़ामंदी से बयान करदा नुकात पर सामयीन अ़श अ़श कर उठे। मजमअ़ नुवेद साहब की ख़ितावत का असीर हो चुका था। तक़रीर मुकम्मल होते ही मुसाफ़ा करने वालों की लाइन लग गई। नुवेद साहब हाथ मिलाते और दाद वसूलते रहे। अचानक नुवेद साहब का हाथ किसी खुरदुरी चीज़ से छू गया। निगाह उठा कर देखा तो सामने हमीद अक़ीदत व एहतराम से मुसाफ़ा के लिए खड़ा था। हमीद एक मज़दूर था मगर उसे इल्मी महफ़िलों का बड़ा शौक़ था। ठेला लिए क्लब से गुज़र रहा था के नुवेद साहब की आमद का मालूम हुआ। बस ठेला किनारे लगाया और हाल जाकर पूरी तक़रीर सुनी। अक़ीदत से हाथ भी मिलाया मगर पेशे की मेहनत ने हाथों पर नक़ूश छोड़ दिए थे। बचपन के साथ ही हाथों की नरमी भी गुज़रे दिनों की बात थी। अब तो ठेला खींचते खींचते हाथ सख़्त पत्थर की तरह हो चुके थे। हमीद ने जितनी अक़ीदत से मुसाफ़ा किया नुवेद साहब ने उतनी ही हिकारत से हाथ झटक दिया। हमीद के कपड़े भी क़ुदरे

मैले थे। मज़ीद धूप में ठेला खींचने की वजह से कपड़ों पर पसीने के निशानात साफ़ नज़र आ रहे थे। खुरदुरेपन की वजह से ही नुवेद साहब ने हाथ झटक दिया था। अब जो हमीद का सरापा देखा तो ग़ज़बनाक लहजे में बोले:

"गंवार, गंवार ही होता है। पहनने का शऊर, न नहाने का ख़्याल, कहीं भी घुस जाते हैं। और अपनी किसाफ़त से माहौल ताफ़्फुन ज़दह कर देते हैं।"

हमीद रोनी सी सूरत लिए सोच रहा था अभी जो शख़्स इस्लामी मुसावात पर इस क़दर गुफ़्तगू कर रहा था वो अ़मली तौर पर किस बेदर्दी से मुसावात की धज्जियां बिखेर रहा है। सर झुकाए महफ़िल से निकला और ठेला खींचते हुए शहर की गलियों में गुम हो गया।

हमारे आसपास ऐसे कितने ही नुवेद बस्ते हैं जो लिखने, बोलने की हद तक बड़े, मुहज़्ज़ब, अख़लाक़मंद और पैकरे मुसावात नज़र आते हैं लेकिन मैले कपड़े वाले किसी ग़रीब मज़दूर को देखते हुए उनका मफ़रूज़ा तहज़ीब व तमद्दुन और फ़िक्र मुसावात सुबह काज़िब की तरह ग़ायब हो जाती है। चेहरे ग़ज़बनाक, लहजा आतिश फ़िशां और आँखें शरारे बरसाने लगती हैं। हालांकि रसूल अल्लाह ﷺ का तर्ज़े अ़मल बड़ा प्यारा और निहायत सादा सा था। ग़नी हो या फ़कीर, अमीर हो या मज़दूर, सब के साथ एक सा सलूक फ़रमाते। हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अनहु की रिवायत है कि ज़ाहिर बिन हिराम नामी एक देहाती थे। हुज़ूर ﷺ से बेहद लगाव रखते थे। ख़ुद हुज़ूर को भी ज़ाहिर बिन हिराम से बेहद उन्स था। आप फ़रमाते थे:

إِنَّ زاهرًا باديتنا، ونحن حاضروه.(رواه احمد 161/3)

"ज़ाहिर हमारा बादिया नशीं है और हम इसके शहरी दोस्त हैं।"

ज़ाहिर जब भी मदीना आते तो हुज़ूर के लिए पनीर, घी वगैरह लेकर आते। वापसी में हुज़ूर भी उन्हें तहायफ़ देकर रुख़सत फ़रमाया करते। एक मर्तबा वह हाज़िर हुए तो सरकार घर पर न मिले वो सामान बेचने बाज़ार चले गए हुज़ूर को जब ज़ाहिर की ख़बर मिली तो आप तलाशते हुए बाज़ार पहुंच गए। एक जगह ज़ाहिर नज़र आए। धूप की शिद्दत से कपड़े पसीने से शराबोर और जिस्म गर्द आलूद था। हुज़ूर पीछे से आए और ख़ुश तबई फ़रमाते हुए दोनों हाथों से ज़ाहिर की आंखें बन्द कर दीं। ज़ाहिर ने पूछा कौन है? मगर हुज़ूर ख़ामोश रहे। ज़ाहिर ने फिर पूछा मगर हुज़ूर बदस्तूर ख़ामोश रहे हत्ता के ज़ाहिर ने कंखियों से आपको पहचान लिया। बस फ़िर तो मोहब्बत में आप के हाथों की गिरफ़्त में मचलने लगे। हुज़ूर ने अज़रहे मज़ह फ़रमाया:



من يشتري العبد؟

यह ग़ुलाम कौन ख़रीदेगा?

यह सुनकर ज़ाहिर बिन हिराम अर्ज़ करते हैं हुज़ूर!

तब तो आपको बहुत कम क़ीमत मिलेगी क्योंकि मैं बड़ा मामूली ग़ुलाम हूं, बाज़ार में कोई मेरी अच्छी कीमत नहीं देगा!!

जवाबन सरकार ने इरशाद फ़रमाया:

لكن عند الله لست بكاسد. أو قال: لكن عند الله أنت غال

"ज़ाहिर अल्लाह के नज़दीक तुम कम कीमत नहीं हो। अल्लाह के नज़दीक तुम बड़ी कीमत वाले हो।"

दोस्ताने मोहतरम!!

हुज़ूर नबी अकरम ﷺ का तर्ज़े अ़मल देखें के ज़ाहिर को तलाशने बाज़ार तक जाते हैं। पसीने से शराबोर, गर्द व ग़ुबार से आलूद शख़्स से इसी ख़ुश मिज़ाजी और अपनाइयत से मिलते हैं जैसा रोसाए अरब से मिलते। सरकारे मदीना के यही वह अख़लाक़ थे के ग़ुरबा व मसाकीन आप की तरफ़ बेइख़्तियार खिंचे आते थे।

आज लोग लिबास और दुनियावी देखकर बात करते हैं। अच्छे मकान, बड़ी गाड़ियों से इंसान का दर्जा तय किया जाता है। लेकिन अच्छे कपड़ों से इंसान क़ीमती नहीं होता ख़ुलूस ही इंसान को क़ीमती बनाता है। इसलिए किसी इंसान को उसके कपड़ों से नहीं उसके ख़ुलूस व मोहब्बत से जांचें ताकि मुआशरे से ऊंच नीच का फ़र्क मिटे। मुसावात आम हो। मुसलमान, मुसलमान हक़ीक़ी भाई नज़र आएं।

در نگاہے او یکے بالا و پست

با غلامِ خویش بر یک خواں نشست

सूद ख़ोरी का अज़ाब

:मुहम्मद फ़ैज़ बदायूंनी

सूद की तारीफ़:

सूद को अरबी ज़बान में "रिबा" कहते हैं जिसका लुग़वी मायना ज़्यादा होना, परवान चढ़ना और बुलन्दी की तरफ़ जाना है और इस्तेलाहे शरअ़ में रिबा (सूद) की तारीफ़ यह है के:

"किसी को इस शर्त के साथ रक़म उधार देना के वापसी के वक़्त वो कुछ रक़म ज़्यादा लेगा। मस्लन किसी को साल या छः माह के लिए 100 रुपए क़र्ज़ दिए, तो इससे यह शर्त कर ली के वह 100 रुपए के 120 रुपए लेगा, मोहलत के एवज़, यह जो 20 रुपए ज़्यादा लिए गए हैं, यह सूद है।"

सूद ख़ोरी का अज़ाब शदीद अज़ रुए क़ुरान मजीद:

शरियत ने हराम कामों और गुनाहों की जो तफ़्सील बताई है, उसमें सूद का गुनाह सरे फ़ेहरिस्त है, क़ुरान व हदीस में सूद की शिनाअत व क़बाहत के ताल्लुक़ से ऐसे ऐसे अल्फ़ाज़ बयान हुए हैं जो लरज़ह तारी कर देते हैं चुनान्चे अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

يآايها اللذين آمنوا لا تأكل الربوٰا أضعافا مضعفة

तर्जुमा:- ऐ ईमान वालों दुगुना दर दुगना सूद न खाओ।

(پ٤، آل عمران، آیت نمبر ١٣٠)

और फ़रमाता है:

ياايها اللذين آمنوا اتقوا الله وذروا ما بقي من الربوٰا إن كنتم مؤمنين . فإن لم تفعلوا فأذنوا بحرب من الله ورسوله

(پارہ نمبر ٣ سورہ بقرہ آیت نمبر ٢٨٧، ٢٨٩)

ऐ ईमान वालों! अल्लाह से डरो और जो सूद लोगों के पास बाक़ी रह गया है अगर ईमान वाले हो तो उसे छोड़ दो, अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से जंग के लिए खबरदार हो जाओ।

सूदख़ोर अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ से जंग करता है और अल्लाह अज़्ज़वजल इसे ऐलाने जंग फ़रमाता है हलाकत है उस शख़्स के लिए जिसके और अल्लाह के माबैन जंग हो और उससे अल्लाह तआला की नाराज़गी हो।

ग़ौर किया जाए तो वाज़ेह है कि क़ुरान मजीद ने शिर्क के बाद बड़े से बड़े गुनाह के बारे में भी इतने सख़्त अल्फ़ाज़ और इतना सख़्त लबो लहजा इस्तेमाल नहीं किया जितना सख़्त लबो लहजा व लफ़्ज़ सूद के बारे में इस्तेमाल किया है। "ऐलाने जंग" के अल्फ़ाज़ इन्तेहाई सख़्त वईद और बदतरीन शनाअत के इज़्हार के लिए हैं। रिवायत में आता है के एक शख़्स इमामे मालिक बिन अनस की खिदमत में आया और अर्ज़ किया: मैं ने शराब का एक ऐसा रसिया और नशे में चूर शख़्स देखा जो चांद को पकड़ने की कोशिश कर रहा था, उस पर मैं ने

कहा: अगर इंसान के पेट में शराब से भी बदतर कोई चीज़ उतरने वाली हो तो मेरी बीवी को तलाक़, आया ये तलाक़ वाक़ेअ होगी या नहीं? तो आप ने फ़रमाया: अभी लौट जाओ के मैं तुम्हारे मसले में ग़ौर कर लूं, वो दूसरे दिन आया तो भी फ़रमाया: अभी लौट जाओ के मैं तुम्हारे मसले में ग़ौर कर लूं, वह तीसरे दिन आया तो फ़रमाया: तुम्हारी बीवी को तलाक़ पड़ गई। इसलिए के मैंने किताब अल्लाह और सुन्नत रसूल अल्लाह ﷺ में इन्तेहाई ग़ौर व तदब्बुर किया; मगर सूद से बदतर कोई चीज़ नज़र न आई, इसलिए के इस पर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से ऐलान जंग है।

अल्लाह तआ़ला सूद की बेबरकती और नहूसत के वबाल को बयान करते हुए इरशाद फ़रमाता है:

الذين يأكلون الربوٰا لا يقومون إلا كما يقوم الذى يتخبطه الشيطان من المس ذلك بأنهم قالوا إنما البيع مثل الربوا . وأحل الله البيع و حرم الربوا . فمن جاءه موعظة من ربه فانتهىٰ فله ما سلف وأمره إلى الله . ومن عاد فاولٓئك أصحٰب النار هم فيها خٰلدون . يمحق الله الربوا ويربي الصدقات والله لايحب كل كفار أثيم

तर्जुमा:- "जो लोग सूद खाते हैं वह अपनी क़ब्रों से ऐसे उठेंगे जिस तरह वो शख़्स उठता है जिसको शैतान (आसेब) छू कर बावला कर दिया है। यह इस वजह से है के उन्होंने कहा बीअ़ मिस्ल सूद है और अल्लाह तआ़ला ने बीअ़ को हलाल रखा है और सूद को हराम। बस जिस को ख़ुदा की तरफ़ से नसीहत पहुंच गई और वो बाज़ आया तो जो कुछ पहले कर चुका है, उसके लिए माफ़ है और उसका मामला अल्लाह तआ़ला के सुपुर्द है और फिर जो ऐसा ही करें वो जहन्नमी हैं, वो उसमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह अ़ज़्ज़वजल सूद को

मिटाता है और सदाक़त को बढ़ाता है और नाशुक्रे गुनाहगार को अल्लाह तआला दोस्त नहीं रखता।"

(پ ۳، البقرہ، آیت نمبر ۲۷۶۲۷۵)

एक दूसरे मक़ाम पर है अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

وما آتيتم من ربا ليربوا في أموال الناس فلا يربوا عند الله وما آتيتم من زكوٰة تريدون وجه الله فأولٰئك هم المضعفون ○

जो कुछ तुम ने सूद पर दिया के लोगों के माल में बढ़ता रहे, वो अल्लाह अज़्ज़वजल के नज़दीक नहीं बढ़ता और जो कुछ तुमने ज़कात दी जिससे अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी चाहते हो, वो अपना माल दूना करने वाले हैं।

(پ ۲۱، الروم، آیت نمبر ۳۹)

सूद और सदक़ा की हक़ीक़त, नतायज, अग़राज़ और कैफ़ियात सब मुतज़ाद होते हैं, सदक़ा में अपना माल बिला मुआवज़ा दूसरे को दिया जाता है और सूद में दूसरे का माल बिला माली मुआवज़ा के लिया जाता है, सदक़ा की ग़र्ज़ रज़ाए इलाही और सवाब आख़िरत होती है; जबकि सूद की ग़र्ज़ अल्लाह के ग़ज़ब से निडर होकर अपनी मौजूदा दौलत में नाजायज़ इज़ाफ़े की हवस होती है। नतीजे का फ़र्क क़ुरान की इसी आयत ने बता दिया के अल्लाह सूद से हासिल होने वाले माल की बरकत व ख़ैर मिटा देता है; जबकि सदक़ा करने वाले के माल को और उसकी बरकत को बढ़ा देता है, कैफ़ियात का फ़र्क यह होता है कि सदक़ा देने वाले को मतनूअ आमाल ख़ैर की तौफ़ीक अता होती है और सूदख़ोर बिलअमूम महरूमी में मुब्तिला कर दिया जाता है।

अहादीसे मुस्तफ़ा की रोशनी में सूद ख़ोरी का वबाल:

हुज्जतुल विदा के मौक़े पर जिस में तक़रीबन सारे सहाबा किराम अरब के चप्पे-चप्पे से उमन्ड आए थे इस में भी ख़ुसूसियत के साथ आप ﷺ ने तिजारती और मुआशरती हर तरह के सूद की हुरमत का ऐलान फ़रमाया:

सुन लो! जाहिलियत की हर चीज़ मेरे पाऊं तले रौंद दी गई और जाहिलियत का सूद ख़त्म कर दिया गया और हमारे सूद में से पहला सूद जिसे मैं ख़त्म कर रहा हूं वो अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का सूद है। अब यह सारा सूद ख़त्म है।"

(خطبه حجة الوداع ، عامة كتب)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हन्ज़ला रज़ि अल्लाहु अन्हु कहते हैं कि रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: **"सूद का एक दिरहम, जिसे इंसान जानते हुए खाता है वो 36 मर्तबा ज़िनाकारी से भी बदतर है। इसकी मिस्ल बिहक़ी ने इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत की।**

(المسند للامام احمد بن حنبل ، حديث عبدالله بن حنظله ، رقم الحديث ٢٢٠١٦ ، ج٢ ، ص٣٣١)

सय्यदुना अब्दुल्लाह बिन मसूद से रिवायत है के रसूल करीम ﷺ फ़रमाया: **"सूद के 70 दरवाज़े हैं, उनका सबसे हल्का गुनाह यह है कि जैसे कोई आदमी अपनी मां के साथ निकाह करे। सबसे बदतरीन सूद किसी मुसलमान की इज़्ज़त से खिलवाड़ करना है।"**

(سنن ابن ماجه ، رقم الحديث ٢٢٧٦ ج ٣، ص ٤٢)

सय्यदुना जाबिर कहते हैं: रसूल अल्लाह ﷺ ने सूद खाने वाले, और उसे खिलाने वाले और उस (दस्तावेज) के लिखने वाले, और उसकी गवाही देने वालों पर लानत भेजी है और फिर फ़रमाया कि यह तमाम के तमाम गुनाह में बराबर के शरीक हैं।

(صحیح مسلم ، کتاب المساقاۃ۔۔۔الخ ، باب لعن آکل الربوا و مؤکلہ رقم الحدیث ۱۰۶۱۰۵ ، ص ۸۶۲ بحوالہ بہار شریعت جلد دوم ، ص ۷۶۷

सय्यदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास कहते हैं के रसूल अल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: "जिस गांव में ज़िना और सूद रिवाज पा गया, तो वहां के बाशिंदों ने अपने ऊपर अल्लाह के अज़ाब को हलाल कर लिया है।

(المستدرک ج ۲ ، ص ۳۶)

अहादीस की सराहत के मुताबिक किसी क़ौम, खित्ते और मुआशरे पर इज्तिमायी आफ़त व अज़ाब के आने का एक बुनियादी सबब सूदी कारोबार और सूदी लेन-देन का आम चलन है।

सूद बढ़ता नहीं घटता है:

सूदखोर को बढ़ता और परवान चढ़ता समझना सूद खाने वालों की ख़ाम ख़्याली है जब के अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ ने इसके कम होने और तबाह व बर्बाद होने की पेशीन गोयी फ़रमायी है। जैसा के इरशादे रब्बानी है।

तर्जुमा: "अल्लाह सूद को घटाता है और सदक़ात को बढ़ाता है, और अल्लाह किसी न शुक्रे (सूद ख़ोर) और गुनहगार को दोस्त नहीं रखता है।"

(پ ۳، البقرہ، آیت نمبر ۲۷۶)

يَمۡحَقُ اللّٰهُ الرِّبَا

की तफ़सीर करते हुए सय्यदुना अब्दुल्लाह बिन अब्बास फ़रमाते हैं:

"महक़" (घटाना) यह है के अल्लाह सूदखोर बन्दे का न हज क़ुबूल करता है, न सदक़ा, न जिहाद, और न सिलह रहमी। (यानी उसकी कोई नेकी क़ुबूल नहीं होती।)

(تفسیر قرطبی ۲/۴۳۲)

सय्यदुना बिन मसऊद से मरवी है के रसूले करीम ﷺ ने फ़रमाया: "जिस शख़्स ने सूद के ज़रिए ज़्यादा (माल) हासिल किया, उसका अंजाम कमी पर ही होगा।

(المسند للامام أحمد بن حنبل، رقم الحديث ۳۸۵٤، ج ۲، ص ۵۰ بحوالہ بہار شریعت جلد دوم ص ۷٦۸)

एक और रिवायत में है: **"सूद अगरचे बज़ाहिर ज़्यादा नज़र आता है लेकिन उसका अंजाम कमी और क़िल्लत है।"**

(المرجع السابق)

दुनियादार इंसान सूद को नफ़अ बख़्श और ज़कात को माल में कमी करने वाला समझता है जबकि हक़ीक़त बिल्कुल बरअक्स है। ऐसे ख़ाम ख़्याल अफ़राद की हिदायत के लिए सूद के मुक़ाबले में अल्लाह तआला ने ज़कात का निज़ाम पेश करते हुए फ़रमाया के माल को बढ़ाना हो तो माल को रब की बारगाह में ज़कात और सदक़ात की शक्ल में पेश करो।

और तुम लोग जो सूद देते हों, ताकि लोगों के अमवाल में इज़ाफ़ा हो जाए तो वोह अल्लाह के नज़दीक नहीं बढ़ता, और तुम लोग जो ज़कात देते हो

अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए ऐसे ही लोग उसे कई गुना बढ़ाने वाले हैं।

क़यामत के रोज़ सूदखोरों की हालत:

क़यामत के दिन सूद ख़ोर एक ख़ास कैफ़ियत से दो चार होंगे, जिससे लोगों को पता चल जाएगा के यह दुनिया में सूद खाते थे। इरशादे बारी है:

"जो लोग सूद खाते हैं, वह अपनी क़ब्रों से ऐसे उठेंगे, जिस तरह वो आदमी जिसे शैतान अपनी असर से दीवाना बना देता है। यह (सज़ा उन्हें) इस लिए मिली के वो कहा करते थे के ख़रीद व फ़रोख़्त भी तो सूद ही के मानिंद है। हालांकि अल्लाह तआ़ला ने ख़रीद व फ़रोख़्त को हलाल किया है। और सूद को हराम क़रार दिया है। बस जिसके पास उसके रब की नसीहत पहुंच गई, और वह (सूद लेने से) बाज़ आ गया। तो माज़ी में जो ले चुका है वह उसका है, और इसका मुआमला अल्लाह के हवाले है, और जो उसके बाद लेगा, तो वही लोग जहन्नमी होंगे। उसमें हमेशा के लिए रहेंगे।"

सय्यदुना औफ बिन मालिक सुआद से मरवी है के रसूल अकरम ﷺ ने फ़रमाया: "तुम उन गुनाहों से बचो जो (बग़ैर तौबा के) बख़्शे नहीं जाते।

1) ख़्यानत: जिसने किसी चीज़ में ख़्यानत की, उस चीज़ के साथ उसे क़यामत के दिन हाज़िर किया जाएगा।

2) सूदख़ोरी: इसलिए के जो शख़्स सूद खाएगा क़यामत के दिन पागल शख़्स की तरह झूमते हुए उठेगा फिर आप ने यह आयत तिलावत फ़रमायी।

तर्जुमा: "जो लोग सूद खाते हैं, वोह अपनी क़ब्रों से ऐसे उठेंगे, जिस तरह वोह आदमी जिसे शैतान अपने असर से दीवाना बना देता है।"

सूदखोरी एक ऐसा संगीन जुर्म है के आलमे बरज़ख और क़ब्र में भी अज़ाब का बाइस होगा, और आख़िरत में भी मुवजिब सज़ा होगा।

सय्यदुना समरह बिन जुन्दब कहते हैं के रसूल अल्लाह ने फ़रमाया: "रात में मेरे पास दो फ़रिश्ते (हज़रत जिब्राईल और हज़रत मीकाईल) आए, वो मुझे उठाकर पाक सरज़मीं (बैतूल मुक़द्दस) की तरफ़ ले गए आप ﷺ ने कई चीज़ें मुलाहिज़ा फ़रमाईं, जिन में एक चीज़ यह भी थी के आप ने एक ख़ून का दरिया देखा, जिस में एक आदमी (तैर रहा) है उस नहर के एक किनारे एक आदमी खड़ा है, उसके पास पत्थरों का एक ढेर है ख़ून के दरिया में जो आदमी है वो कोशिश करता है के उस दरिया से बाहर निकल जाए जब वो किनारे के क़रीब आता है तो किनारे पर खड़ा शख़्स उसके मुंह में ज़ोर से पत्थर दे मारता है फिर वोह शख़्स ख़ून के दरिया के वस्त में चला जाता है फिर वोह कोशिश करता है के बाहर निकल जाए लेकिन किनारे पर खड़ा शख़्स उसके मुंह पर फिर ज़ोर से एक पत्थर मारता है। इसके साथ मुसलसल यही सुलूक हो रहा है। रसूल अल्लाह ﷺ फ़रमाते हैं: मैं ने दोनों से पूछा: "इस आदमी को यह सज़ा क्यों मिल रही है? तो उन्होंhने जवाब दिया: यह सूदख़ोर है, सूदी कारोबार किया करता था इसलिए इसको यह सज़ा मिल रही है।

साथ ही यह भी फ़रमाया: जो सज़ा अपने इसको मिलते देखी वो इसे क़यामत तक मिलती रहेगी।"

(صحیح البخاری، کتاب البیوع، باب آکل الربوا وشاھدہ وکاتبہ، رقم الحدیث ٢٠٨٥، ج ٢، ص ١٥١٤ بحوالہ بہار شریعت جلد دوم، ص ٧٦٧)

खुलासा ए कलाम:

सूदखोर, अल्लाह की रहमत से दूर और वो अल्लाह और उसके रसूल से हालते जंग में रहता है।

अल्लाह तआ़ला ने किसी भी कबीरा गुनाह के मुरतकिब को वो धमकी नहीं दी और इस अज़ाब का वादा नहीं किया जो सूदख़ोर के लिए किया है।

सूद एक इज्तिमायी जुर्म है, वो जिस मुआशरे में रिवाज पा जाएगा उसे तबाह व बर्बाद कर देगा और उसकी (इक़्तिसादी) बुनियादों को मुन्हदिम कर देगा। इसीलिए हम देखते हैं के जिन ग़रीब ममालिक ने आलमी बैंकों से क़र्ज़ लिया है वह सूद दर सूद अदा करते करते तबाह हो गए, लेकिन क़र्ज़ ब दस्तूर बरक़रार है।

सूद खाने वाले शख़्स की कोई इबादत क़ुबूल नहीं होती, जैसा के हदीस में है के **"हराम का एक लुक़्मा खाने की वजह से अल्लाह तआ़ला बन्दे की चालीस दिन की इबादत क़ुबूल नहीं फ़रमाता।"**

नीज़ इरशादे नबवी ﷺ है: **"अगर कोई शख़्स ऐसा लिबास पहनता है जिसमें नौ दिरहम तो हलाल के हैं और एक दिरहम हराम का है तो यह लिबास जब तक उसके जिस्म पर रहेगा अल्लाह तआ़ला उसकी किसी इबादत को क़ुबूल नहीं फ़रमाता।"**

अल्लाह तआ़ला कभी कभी काफ़िर और मुशरिक की दुआ भी क़ुबूल कर लेता है, लेकिन उसकी बारगाह में सूदखोर की दुआ तक क़ुबूल नहीं होती।

